मेरा इश्क़ तिरँगा है

(वीर सिपाहियों को समर्पित)

डॉ. दिलीप गुप्ता

वेबसाइट :- www.bookrivers.com

प्रकाशक ईमेल :- publish@bookrivers.com

मोबाइल :- +91-9695375469

प्रकाशन वर्ष :- 2020

मूल्य :- 150/- रूपये

ISBN:- 978-93-88727-89-1

सम्पादकीय कलम

माँ भारती को नमन ...माँ शारदे को नमन..पूज्य बाबुजी व मात श्री के चरणों मे सादर नमन करते हुए अपनी बात शुरू करता हूँ, भारत की पावन माटी में जन्मा, पला, बढ़ा, भरपूर जिया, कोई मलाल नहीं, किन्तु मेरा तन सीधे-सीधे मातृभूमि के काम नहीं आ पाया इस बात का मलाल अवश्य रह गया...और यही भावना मेरे गीत-ग़ज़ल-कव्वाली में, मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिए वीर सपूतों को और सरहद पर अपनी छाती से बिछकर- अपना लहु सींचकर आजादी की फसलें लहलहाने वाले जाबांजों को नमन करते हुए पुष्पांजलि स्वरूप यह किताब लिखी है, शब्दों के विन्यास में त्रुटियाँ हो सकती हैं जिसके लिए क्षमा करेंगे किन्तु भाव भारत भूमि को समर्पित हैं।

वीरता..माटी को समर्पण, जाबांजी, देश के लिए कुछ कर गुजरने की ललक, लहराते तिरँगे के लिए जान न्यौछावर कर देने की चाहत तथा अराजकता-भ्रष्टाचार-देश द्रोह के खिलाफ बुलन्द हुए मन के भीतर की गर्जना रचनाओं में ढलकर आपके हाथ में है, पढ़कर, आप भी देशभक्ति की धारा में बह जाएँ और मुझपर आशीष बरसादें तो मेरा लिखा सार्थक हो जाएगा।

देश व देशभक्तों को सादर नमन सहित......

लेखक:-

डॉ0 दिलीप गुप्ता

घरघोड़ा-रायगढ़-छ0ग0

मो0-9993919005

शुभकामना संदेश

भारत माता की जय.....

आज आपके हाथ जो पुस्तक है....

निश्चय ही भारत के एक देशभक्त, चिकित्सक व समाज सेवी. कवि के देश-प्रेम गीत, ग़ज़ल, कविता, कवाली का एक अद्वितीय संग्रह है, इनकी लेखनी राष्ट्र-प्रेम की डगर में एक मिशाल बने, ऐसी शुभकामना है। सरहद की सुरक्षा के लिए ज्यों जाबांज सैनिक मर मिटते हैं....सरहद के भीतर जनता के जान माल की हिफाज़त के लिए ज्यों हर वक़्त सिपाही तैनात हैं, मैं समझता हूं इस किताब में प्रकाशित रचनाकार की हर रचना देश को एक नई ऊर्जा-नई चेतना-नए आवेग प्रदान कर केवल और केवल राष्ट्रहित में चिंतन करने बाध्य कर देगी। इनकी रचनाओं में मुखर है महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, भगत सिंह, आज़ाद, सुभाष, विस्मिल-खुदी राम के राष्ट्र प्रेम की हुंकारे.... सिंहों जैसे गरजते जाबांज खयालों के वीर गीतों को पढ़कर कोई भी भारतवासी का हृदय फहरते तिरँगे से इश्क़ किये बिना नहीं रह सकेगा।

"मुझे इश्क़ है तिरँगे से" की एक एक रचना पढ़कर मन मस्तिष्क में माँ भारती और तिरँगे के प्रति दीवानगी सी बढ़ती जाती है, कभी लगता है कि काश...में भी सरहद पर बन्दूक ले क्यों न दुश्मन को मार गिराता, कहीं लगता है कि वीर रस के इन वीर कवि पुत्रों की तरह मैं भी हिंदुस्तान की जय गाथा लिख पड़ूँ, निश्चय ही यह किताब पूरे भारत में देश-प्रेम पर लिखी वीर भावनाओं की वो पुस्तक होगी जो हर हिंदुस्तानी के दिल मे

तिरँगे की आन, बान, शान के लिए मर मिटने के जज्बे को हवा देगी....

इस किताब के लेखक "वीर रचनाकार" को मैं कोटिशः बधाई देते हुए राष्ट्र-प्रेम की वीर भावनाओं को नमन करता हूँ।

जय हिन्द-जय भारती......

बधाई व स्नेहिल शुभकामनाएं–

- नरेंद्र मोदी

प्रधान मंत्री

भारत शासन-भारत

शुभकामना संदेश

इस किताब को पढ़कर धमनी व शिराओं का रक्त जाबांजी के लिए बेचैन हो उठता है......

डॉ0 दिलीप गुप्ता की लिखी यह किताब पूरी तरह से हिंदुस्तानी हृदय का अपने वतन और तिरँगे पर समर्पण की भावना का उफान है।

इनकी रचनाओं की हुंकार में दुश्मन का दिल थर्रा देने वाला तूफान है। रचनाओं के हर शब्द माँ भारती और भारती के सपूतों को समर्पित हैं। रचना की हर पंक्ति मातृभूमि से अनन्त प्रेम को जाहिर करता है। हर रचना में देश और देश रक्षक के प्रति असीम, अलंघ्य, अद्भुत प्रेम से परिपूरित शब्दों की माला से दिलीप गुप्ता ने माँ भारती का "वीर श्रृंगार" किया है। जिसकी आभा और गूंज...हिन्द धरा पर अमर होगी, अनन्त काल तक पढ़ी-सुनी व सुनाई जाएगी।

"इश्क़ है तिरँगे से" नाम को पूर्णतः सार्थक करती वीर कविताएं, गीत, कव्वाली से भरी हर रचना के हर पंक्ति से स्वदेश प्रेम, देश के लिए मर मिटने की शपथ, तिरँगे से अथाह प्रेम जगाती हैं अनायास ही किसी भी भारतीय के हृदय को आंदोलित कर दीवानगी की हद तक देश, सीमा, सुरक्षा, जाँबाजी और हिन्दवीर बनने लहु में उबाल ला सकती हैं..."लाल बहादुर शास्त्री सम्मान" व अनेकों साहित्यिक सम्मान से सम्मानित अनुज डॉ0 दिलीप गुप्ता की कलम हमेशा संसार और समाज की पीड़ा उकेरती रही भ्रष्टाचार, कुरीतियां, अत्याचार के खिलाफ आग

उगलती रही है, पिता-माता देश-धर्म के प्रति अनन्त प्रेम से भरी उनकी रचनाओं को मैंने खूब सुना व सराहा है, उन्हें आशीष, बधाई व शुभकामनाएँ देते हुए उनके यशस्वी जीवन की कामना करते हुए कलम को विश्राम देता हूँ।

जय माँ भारती....।।

-सुधीर सिंह सुधाकर

राष्ट्रीय संयोजक-मगसम-

दिल्ली (भारत)

शुभकामना संदेश

जय- जय हिंदुस्तान

आज आपके हाथ जो पुस्तक हैं.....

निश्चय ही भारत के देशभक्त...कवियों के देश-प्रेम के गीत-ग़ज़ल-कविता-कवाली का एक अद्‌वितीय संग्रह है..... सरहद की सुरक्षा के लिए ज्यों जाबांज सैनिक मर मिटते हैं...सरहद के भीतर जनता के जान माल की हिफाज़त के लिए ज्यों हर वक़्त सिपाही तैनात हैं.... मैं समझता हूँ इस किताब में प्रकाशित रचनाकार देश के सजग प्रहरी की भूमिका ईमानदारी से निभाता हैं.... इनकी रचनाओं में मुखर हैं महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, भगत सिंह, आज़ाद, सुभाष, विस्मिल-खुदी राम के राष्ट्र प्रेम ही हुंकारे...सिंहों जैसे गरजते जाबांज ख्यालों के वीर गीतों को पढ़कर कोई भी भारतवासी का हृदय फहरते तिरँगे से इश्क किये बिना नहीं रह सकेगा।

“किताब” की एक-एक रचना पढ़कर मन मस्तिष्क में माँ भारती और तिरँगे के प्रति दीवानगी सी बढ़ती जाती हैं.... कभी लगता हैं कि काश.... में भी सरहद पर बन्दूक ले क्यों न दुश्मन को मार गिराता.... कहीं लगता है कि वीर रस के इन वीर कवि पुत्रों की तरह मैं भी हिंदुस्तान की जय गाथा लिख पडूँ..... निश्चय ही यह किताब पूरे भारत में देश-प्रेम पर लिखी वीर

भावनाओं की प्रथम पुस्तक होगी जो हर हिंदुस्तानी के दिल में तिरँगें की आन-बान-शान के लिए मर मिटने के अरमान जगा देगी.... इस किताब से जुड़े हिन्द-वीर रचनाकारों व किताब के संयोजक सम्पादक मंडल को मैं कोटिशः बधाई देते हुए राष्ट्र-प्रेम की वीर भावनाओं को नमन करता हूँ।

नमन नमन नमन....

लालजीत सिंह राठिया

विधायक व कैबिनेट मंत्री

छ0ग0 शासन

शुभकामना संदेश

"माँ भारती की जय-भारत के सपूतों की जय"

आज आपके हाथ जो पुस्तक हैं.....

निश्चय ही भारत के देशभक्त...कवियों के देशप्रेम के गीत-ग़ज़ल-कविता-कवाली का एक अद्‌वितीय संग्रह है..... सरहद की सुरक्षा के लिए ज्यों जाबांज सैनिक मर मिटते हैं...सरहद के भीतर जनता के जान माल की हिफाज़त के लिए ज्यों हर वक़्त सिपाही तैनात हैं.... मैं समझता हूँ इस किताब में प्रकाशित रचनाकार देश के सजग प्रहरी की भूमिका ईमानदारी से निभाता हैं.... इनकी रचनाओं में मुखर हैं महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, भगत सिंह, आज़ाद, सुभाष, विस्मिल-खुदी राम के राष्ट्र प्रेम ही हुंकारे...सिंहों जैसे गरजते जाबांज ख्यालों के वीर गीतों को पढ़कर कोई भी भारतवासी का हृदय फहरते तिरँगे से इश्क किये बिना नहीं रह सकेगा।

"किताब" की एक एक रचना पढ़कर मन मस्तिष्क में माँ भारती और तिरँगे के प्रति दीवानगी सी बढ़ती जाती हैं.... कभी लगता हैं कि काश.... में भी सरहद पर बन्दूक ले क्यों न दुश्मन को मार गिराता.... कहीं लगता है कि वीर रस के इन वीर कवि पुत्रों की तरह मैं भी हिंदुस्तान की जय गाथा लिख पडूँ..... निश्चय ही यह किताब पूरे भारत में देशप्रेम पर लिखी वीर

भावनाओं की प्रथम पुस्तक होगी जो हर हिंदुस्तानी के दिल में तिरँगें की आन बान शान के लिए मर मिटने के अरमान जगा देगी.... इस किताब से जुड़े हिन्द-वीर रचनाकारों व किताब के संयोजक सम्पादक मंडल को मैं कोटिशः बधाई देते हुए राष्ट्रप्रेम की वीर भावनाओं को नमन करती हूँ।

जय माँ भारती....

गोमती साय

सांसद (रायगढ़ लोकसभा)

भारत शासन

रचना सूची

क्र.सं.	कविता	पृष्ठ सं.
1.	इश्क तिरँगे से	
2.	आज़ादी सबकी जिम्मेदारी	
3.	या तिरँगे में लिपट कर आऊँगा	
4.	सलाम बार-बार उन जवान के लिए	
5.	मेरी तो जान है कुर्बान बस वतन के लिए	
6.	फहराएगा कश्मीर में अब मेरा तिरँगा	
7.	तिरँगा धर्म पर कुर्बान हो..	
8.	वीरों को बधाई	
9.	मिल जाए अणु बम	
10.	बारूद उड़ाना सिखाइए	
11.	युद्ध का डंका बजादो	
12.	बन बारूद का तूफान	
13.	जीना हो देश के लिए	
14.	हिंदुस्तान गाया करो	
15.	हम हिंदुस्तानी	
16.	तिरँगे के खातिर मरा कीजिये	
17.	जन गण गावा	
18.	सैनिक सरहद पर	
19.	बाल वीर देशगीत	
20.	ध्वज पर न्यौछावर हम	
21.	देश हमारा	

22.	जय जननि, जय भारत माँ	
23.	नमन बोस, बापू, अब्दुल को	
24.	अभी और बेड़ियां बाकी हैं..	
25.	तिरँगे से प्यार कर लेना	
26.	ओढ़ तिरँगा घर आया	
27.	वीरों की धरती है मेरा हिंदुस्तान	
28.	वीरों को नमन	
29.	सीमा के निगहबानों को सौ सौ सलाम है	
30.	देश की पीड़ा समस्या एक होकर मेट दो	
31.	रुको नहीं, झुको नहीं	
32.	सैनिक सींचते हैं खून....	
33.	वीर (आल्हा छन्द)	
34.	चौकीदार	
35.	तिरँगा लहराए	
36.	कन्या कुमारी से कश्मीर तक हमारा है,	
37.	याद कर जंजीरों को	
38.	वीरों को समर्पित	
39.	माँ भारती को शत्- शत् नमन	
40.	याद रहता है	
41.	भारत के बेटे (आल्हा छन्द)	
42.	नश्ले आज़ादी उगा लो	
43.	हिंदुस्तान का बेटा पूछे	
44.	सहर आती है	
45.	बैरी की कब्र खनन कर ले	
46.	रंग दो धरती	

47.	अपने वतन की आन पर	
48.	फिर हुंकारा है	
49.	दुल्हन शहीद की	
50.	न्यू ईयर पर, एक हिन्द (वीर गीत)	
51.	शेर दिल चट्टान हैं हम	
52.	ए वतन....जवानी दे दूंगा	
53.	सरहद के घावों को	
54.	दोहे	
55.	सिपाही सदर कीजिए	
56.	अहं का दिया बुझाओ यार	
57.	सर पे ताज़ तो कांधे पे.....	
58.	दीवार ढहाया जाए	
59.	नापाक पाक	
60.	हिन्द शेर आज़ाद करो	
61.	जड़ें हिला रहा हूँ	
62.	पी.एम ने कर दिया पी.एम	
63.	कंगन	
64.	लंका जलानी है	
65.	एक कविता राष्ट्रीय एकता के लिए	
66.	संविधान को जकड़े भक्षक	
67.	सीमा पे तिरँगा फहराए रखना	
68.	मेरा देश, मेरा देव, मेरी पूजा	
69.	शेर पे सवार मईया देश मेरे आओ	
70.	सिपाही का पैगाम	
71.	वीर मुक्तक....	

फहरते तिरँगे से इश्क़ है हमको

फहरते तिरँगे से इश्क-ओ-उल्फत है हमें यारों
कयामत तक ये फहरे-एक हसरत है हमें यारों।।

सरहद के सिपाही भाई मुझको भी सदा देना
निहत्था, फौज से लड़ने की हिम्मत है हमें यारों।।

दयानत-दोस्ती और अहिंसा दौलत हमारी है
वरन पल में उड़ाने पाक ताक़त है हमें यारों।।

टैंक औ मीसाइल न गोलियों से हम कभी डरते
"बेटे हिन्द के" "खुदा की रहमत" हैं हमें यारो।।

कसम माँ भारती जब हिमालय को शत्रु लांघेगा
टुकड़े-टुकड़े न कर दूं तो लानत है हमें यारों।।

शत्रु चीनी-पाकी..पीठ पर जो वार करते हैं
सुलह कोई न हो इनसे, अदावत है हमें यारों।।

मैं भी बन्दूक उठा के दुश्मनों पे कहर बन बरपुं
कानून ऐसे नहीं, इसकी शिकायत है हमें यारों।।

आज़ादी सबकी जिम्मेदारी

सरकारी भवनों चौराहों, देश-प्रेम के बजते गीत।
विजय पताका फहर रहा है, आज़ादी का दे संगीत।।
मुक्त पवन है, मुक्त सांस है, मुक्त धरा-आकाश है।
मुक्त हिन्द जन कुर्बानी, वीरों के कर अहसास है।।

हारा अत्याचार औ हारी हवसपूर्ण.. है बर्बरता।
वीरों का है लहू प्रकाश, जो तम-सितम को है हरता।
मत खोना अब भूल से अपनी ये महंगी आज़ादी।
भारत के कितने लालों ने, अपनी बलि चढ़ा दी।।

कोई फिर से शांत वतन में बम बारूद उड़ाए।
वीर, ऐसे आतंकी का सर काट-काट कर लाए।।
सरहद पर तो अड़ी हुई है ...चट्टानों सी सेना।
भीतर हम त्रिशूल उठा, बैरी की फोड़े नैना।।

भीतर बाहर और आस्तीनों में जो सांप बसें हैं।
मौक़ा पाकर अमन चैन को देश के बल को डसे है।।
टोपी, कुर्सी, वर्दी, धोती, तिलक, जनेऊ, पगड़ी।
नज़र न खोना छुपे हुई कंसों की फौजें तगड़ी।।

धन सत्ता के लिए देश, दंगे हड़ताल कराते।
सीधी भोली जनता के सर विदेशी कर्ज बढ़ाते।।
सजग रहो सब देशधर्म को तब झंडा फहरेगा।
वरना दुश्मन वेश बदलकर आ हम में ठहरेगा।।

आज़ादी और अमन चैन को मत समझो सरकारी।
केवल सेना की नहीं, स्वतंत्रता सबकी जिम्मेदारी।।

या तिरँगे में लिपटकर आऊँगा...

माँ न रोना लौट कर मैं आऊंगा..
शत्रु को कभी पीठ ना दिखलाऊंगा।।
माँ भारती का कर्ज़ मैं चुकाऊंगा..
कोख तेरा ...मैं नहीं लजाऊंगा ।।
"हिमशिखर विजय ध्वजा फहराऊंगा..
या तिरंगे में लिपटकर आऊंगा।।"

मेरे वतन की भूमि पर जन्नत जो है..
बैरी लालच औ हवस के वश में है,
जिस आँख में गंदे इरादे आए हैं..
बारूद माँ के आंचलों बिछाए हैं,
कायरों ने मुँह अँधेरे सीमा पर
सोते शेरो पर, बम बरसाए हैं,
धोखे से जब, एक भी वीर मारेंगे
दस शीश मैं नापाक काट लाऊंगा..
"हिमालय पर मैं ध्वजा फहराऊंगा
या तिरंगे में लिपट कर आऊंगा ।।"

माँ न रोना लौट कर के आऊंगा
मातृ भू का कर्ज मैं चुकाऊंगा ।।"
जो लिपट आया तिरंगे में अगर
बहना राखी तुम तिरंगे में पिरोना
आत्मा मेरी गर्व से मुस्काएगी
बच्चे मेरे शव पर बिलकुल न रोना
शहीद की बेबा न पोंछे मांग को
मृत्यु नहीं है देश पर कुर्बान होना....
बेटा मेरा रण भूमि में तुम भेजना
मेरे अधूरे फर्ज़ को ....सहेजना,
बैरी के छक्के छुड़ाकर आऊंगा..
शत्रुओं की लाशें बिछाकर आऊंगा ....
माँ न रोना लौट कर मैं आऊंगा
माँ भारती का कर्ज मैं चुकाऊंगा...
दूध तेरा मैं नहीं ..लजाऊंगा..
आतंकियों का कर के वध मैं आऊंगा
“हिमालय ..भारत ध्वजा फहराऊंगा
चाहे तिरंगे में लिपट कर आऊंगा ।।"

धर्म मेरा -कर्म मेरा, देश है
माता-पिता-गुरु-वतन का सन्देश है..
टैंकों के आगे से ..हटना हटना नहीं
शत्रु के तोपों से डरना मैं नहीं..

धावा बैरी का हुआ तो सामने मैं

अपनी छाती आगे कर अड़ जाऊँगा..

चाहे सेना उसकी हो असलों-विशाल

मैं अकेला निहत्था ..लड़ जाऊंगा...

ऐ वतन तेरी कसम माँ भारती

कायरों के रक्त से नहलाऊंगा..

शत्रुओं की मुंड माला लाऊंगा

माँ भारती के चरणों में चढ़ाऊंगा,

हाथ भर के चीन-पाकिस्तान को

पलक भर में मैं सबक सिखलाऊंगा.....

माँ न रोना लौट कर मैं आऊंगा

बहना न रोना लौट कर मई आऊंगा

बेटा न रोना लौट कर मैं आऊंगा

सजनी न रोना लौट कर के आऊंगा.. ||

तुम सभी के भाल मैं उठाऊंगा...

तिरंगा झुकने न दूँगा मैं कभी

"लाल" हूँ ...मैं "लाल" हो बिछ जाऊंगा

हिमालय पर ...तिरंगा फहराऊंगा....

या "तिरंगे में लिपटकर" आऊंगा |||

सलाम बार-बार उन जवान के लिए

(कव्वाली-जवानों को समर्पित)

सीमा पे खड़ा हथेली में ..जान है लिए..
देता है अपनी जान हिंदुस्तान के लिए
माँ भारती की आन-बान-शान के लिए
सलाम बार बार उन जवान के लिए।।

जिसके लहू की हरेक बून्द, मातृ भू को अर्पित है
जिसका शरीर जीना मरना देश को समर्पित है,
माता पिता घर द्वार सब को छोड़ आया है
बीबी-बच्चे-भाई-बहन-भी छोड़ आया है,
सलाम बार बार उन जवान के लिए...
खाएगा गोली तिरँगे की शान के लिए...
सीमा पे खड़ा हथेली पे जान है लिए।।

वर्दी और शपथ को-रिश्ते-नाते वार देते हैं
सरहद में डटे अपनी हर खुशी को मार देते हैं,
हिमालय से अडिग अपने फ़र्ज़ के लिए
जन्मे जहां में.. मातृ भू के..कर्ज़ के लिए
देश रक्षा -दिल मे ...अरमान के लिए
चौकस वतन के सभी निगेहबान के लिए...
सलाम बार-बार उन जवान के लिए-
सीमा पे अड़े हथेली पे जान जो लिए।।

शत्रु आक्रमण करे तो, वो ही ढाल होते है
उनकी जांपरस्ती से, सुकून से घर सोते है.
देश को छू ही न पाए कोई मुसीबत..
वो कवच बने रहते हैं अवाम के हर वक़्त..
टैंकों के आगे अड़े जो चट्टान ..के लिये
जनता के लिए होते जो कुर्बान ...के लिए
सलाम बार-बार उन जवान के लिए...
सीमा पे खड़े हथेली पे जान जो लिए।।

भीषण हो सर्द रात या..सूरज प्रचण्ड भी..
चल रही हो आंधियां-तूफा प्रचण्ड भी..
कांटो में पत्थरों में सांप बिच्छुओं में भी रहे
महफ़ूज़ करने तिरँगा खतरों में ही रहे...
झँडे की कसम खाके.. हिन्दोस्तान के लिए
खतरों से लड़े.. भारती की मान के लिए..
सलाम बार-बार उन जवान के लिए
भारत के सरहदों के निगहबान के लिए।।

कोई भी सुविधा नहीं, उन भारत के शेरों को
लाखों फूंके रोज जहां मंत्रियों के फेरो को
कार, फोन-शान मान नेता अफ़सरों के लिए
छाती से बिछा जो, कुछ नहीं उनके घरों के लिये..
मजबूत अगर रखना-देश सम्पन्न सुरक्षित
सरकार सोचे किसान औ जवान के लिए....

सरहद पे खड़े हथेली पे जान जो लिए

सलाम बार- बार उन जवान के लिए।।

मेरी तो जान है कुर्बान बस वतन के लिए

न ही कुर्सी के लिए, न ही टोपी के लिए

न तो नोटों के लिए, न ही रोटी के लिए,

न ही दौलत के लिए, न ही शोहरत के लिए

न बीबी बच्चों दोस्तों की सोहबत के लिए.....

जना है जिस धरा ने, हिफाज़त में हूँ दफन के लिए

हूँ हिमालय पे खड़ा...सीमा के जतन के लिए।।

मैं तो जीता हूँ हिंदुस्तान में अमन के लिए

मेरी ये जान तो कुर्बान है.....वतन के लिए।।

मेरे रग-रग में शहीदों का लहू बहता है

है हिंदुस्तान-मेरी जान....लहू कहता है,

मेरी सांसों में फहरता है तिरँगा प्यारा

मेरी आशों में लहरता है तिरँगा प्यारा,

रगों में खौल रहा है लहू दुश्मन के लिए

हूँ मैं सरहद पे खड़ा..बैरी के दमन के लिए

हूँ हिमालय पे अड़ा अम्नो-चमन के लिए

मेरी हर सांस हिंदुस्तान में अमन के लिए...
मेरी ये जान तो कुर्बान है वतन के लिए।।

मैंने ओढ़ी है एक कसम माँ भारती के लिए
मैंने छोड़ी है हर करम माँ भारती के लिए,
मैंने दूल्हा नहीं बनना है न बारात की जिद्द
एक अरमान की अर्थी मेरी जब निकले
मेरी छाती पे तिरँगा हो एक कफ़न के लिए।।
रगों में खौल रहा है लहू दुश्मन के लिए
हूँ मैं सरहद पे खड़ा..बैरी के दमन के लिए
हूँ हिमालय पे अड़ा अम्नो-चमन के लिए
मेरी हर सांस हिंदुस्तान में अमन के लिए...
मेरी ये जान तो कुर्बान है वतन के लिए।।

ये तिरँगा हमेशा ...सरहदों पे लहराए
कोई बैरी न मेरे देश कभी घुस पाए,
मेरा सीना है ढाल...शत्रु के बम-गोलों से
मेरे जज्बे भरे है बारूद और शोलों से,,
चौकस खड़ा हूँ मैं दिन रात जो दुश्मन के लिए
रक्त की नदियां बहा दूंगा मैं चमन के लिए।।
मेरी हर सांस है कुर्बान बस वतन के लिए
रगों में खौल रहा है लहू दुश्मन के लिए
हूँ मैं सरहद पे खड़ा..बैरी के दमन के लिए
हूँ हिमालय पे अड़ा अम्नो-चमन के लिए

मेरी हर सांस हिंदुस्तान में अमन के लिए...
आंधी तूफान बर्फबारी से नहीं डरता
पाक-नापाक-चीन की फ़िकर नहीं करता,
मैं अकेला भी ईनके टैंकों से लड़ जाऊंगा
मैं निहत्था भी इनपे भारी ही पड़ जाऊंगा,
शहीद होने को तैयार हूँ अमन के लिए--
अड़ा सरहद में हूँ आतंक के दमन के लिए।।
मेरी हर सांस है कुर्बान बस वतन के लिए
मेरी तो जान है कुर्बान बस वतन के लिए।।

मैं हूँ जिंदा तो हिंदुस्तान में अमन के लिए
मेरी तो जान है कुर्बान बस वतन के लिए।।
रगों में खौल रहा है लहु दुश्मन के लिए
हूँ मैं सरहद पे खड़ा..बैरी के दमन के लिए
हूँ हिमालय पे अड़ा अम्नो-चमन के लिए
मेरी हर सांस हिंदुस्तान के अमन के लिए...

फहराएगा कश्मीर में अब मेरा तिरँगा

फहराएगा कश्मीर में ....अब मेरा तिरँगा

लहराएगा कश्मीर में.....अब मेरा तिरँगा...।।

भारत का स्वर्ग भारती जयगान कर रहा

कोई न रोक पाएगा....अब मेरा तिरँगा।।

कश्मीर की हवा में गूंजी भारती की जय

पत्थर तो नहीं खाएगा...अब मेरा तिरँगा...।।

नापाक की अब खैर नहीं, फिर जो घुस आए

चीर के खा जाएगा...अब मेरा तिरँगा...।।

भारत के वीर होंगे वहां दहशत हुआ ख़तम

रक्षा वचन निभाएगा...अब मेरा तिरँगा।।

नाचते हैवान थे ...कश्मीर में... रात दिन

आतंक को मिटाएगा....अब मेरा तिरँगा...।।

दो शेरो ने फना किया... तीन सौ ...सत्तर

आकाश में लहराएगा...अब मेरा तिरँगा।।

गांधी अटल इंदिरा -सपना अखण्ड भारत

ब्रम्हांड में लहराएगा...अब मेरा तिरँगा।।

तिरंगा धर्म पर कुर्बान हो

(एक देश भक्ति गीत)

मैं तिरंगा धर्म पर......कुर्बां हो जाना चाहता हूँ।
त्याग सब कुछ मातृ भू की शां हो जाना चाहता हूँ।।
जिस कोख में जन्मा-पला-आया धरा पर सांस ले।
कोख औ धरा के खातिर सब लुटाना चाहता हूँ।।

प्रथम पूजूँ माँ-पिता और....मातृभूमि की धरा।
नमन वन्दन फिर... सपूतों का मनाना चाहता हूँ।।
9 सैकड़ों सालों से जब हैवानीयत थी राज करती।
रोते-पिसते-हिन्द-जन... यादें दिलाना चाहता हूँ।।

जब धरा पुत्रों ने हंसकर, फांसी का फंदा स्वीकारा।
माँ भारती पर बिछ गए, वो दृश्य दिखाना चाहता हूँ।।
भगत-शेखर-गुरु-सुभाष, बिस्मिल्ला-और तिलक के।
सुखदेव-बल्लभ-लक्ष्मी की मैं राह जाना चाहता हूँ।।

राणा-शिवा-तात्या से वीरों की धरा पर जन्मा हूँ।
बापू सा अनशन का चरखा मैं चलाना चाहता हूँ।।
आज फिर आज़ाद धरती..पर नज़र शत्रु की है तो।
शत्रुओं की मुण्डमाला माँ को पहनाना चाहता हूँ।।

जो नज़र मेरे तिरंगे पर गड़ेगी ....जब कभी भी।
आँखें निकाल चील-कौवों को खिलाना चाहता हूँ।।

सरहदों की शान्ति छीने -बैर बोये-खून बहाये।
बैरी सारे मार, हिमगिर ध्वज..फहराना चाहता हूँ।।

वीरों को बधाई

जबसे हमने हाथों में बन्दूक है सम्भाला,
आगे गीला पीछे पीला शत्रु है कर डाला।।
भड़की है आग बदले की, ठंडी नहीं होगी,
आँखों में नहीं आँसू अब जलती है ज्वाला।।
अब न कोई वीर, ओढ़े तिरँगा घर आए,
लाए तिरँगा फहरता और शत्रु मुंड माला।।
धोखे से सुवरन ने किया, वीरों पे हमला,
वीरों ने घुस के घर मे जिंदा जला डाला।।
बालकोट जल गया, तालिबान है बाकी,
खाक में मिला के कर दो उसका मुं काला।।
जवानों औ जाबांजो को बधाई दी दिलीप,
बम गिरा शैतानियत के कस-बल निकाला।।

मिल जाए अणु बम

हर शख्स ख्वाहिशों में डूबा हुवा सा है,
फर्ज़-ए-वतन को भुला हुवा सा है।।
जिन दिनों माँ कैद थी जुल्मों का कहर था,
मर मिटे कितने खबर हरा हुआ सा है।।
गुलामी की जमीं रंगी हुई थी खून से,
शहीदों का लहू ..चीखता हुआ सा है।।
जानवर की तरह झुक के जी रहा था भारतीय,
वो जुल्म, वो सितम को बिसरा हुआ सा है।।
अंग्रेजी दासता से आजादी की कथा,
अंग्रेजी में सुना-सुना फुला हुआ सा है।।
हिन्द के बेटों को ये सवाल है दिलीप,
आज़ाद हिन्द जख्मों से क्यूं भरा हुआ सा है ! ?
नापाक हरकतें रोज दे रही है जख़्म,
सिपहसलार हज में खोया हुआ सा है।।
हर कमर में म्यान, तीर तरकशों में हों,
दिल दुश्मनों का हरदम डरा हुआ सा हो।।
मिल जाये अणु बम दिलीप को एक भी कभी,
नापाक इरादों का मुँह, झुलसा हुआ सा हो।।

बारूद उड़ाना सिखाइये

धर्म की दुकान खोल कर..माथ पे तिलक लगाइए।
भय दिखा के भ्रम औ ढोंग के, सामान बेंच खाइए।।

देवों की धरा है हिंदुस्तान, आस्था-विश्वास का है घर।
देवों का बखान सुनाकर, दौलत-शोहरत कमाइए।।

सरहदों की मांग है बेटे, बाहुबल के साथ आ डटें।
देश के सपूत इकट्ठा कर, भजन गाकर नचाइये।।

बिलबिला उठा हो वतन जब...आतंकी हमलों से।
देश के जवानों को...बारूद उड़ाना सिखाइये।।

सियासत के झंड़ेदारों ने, घोल दिए हैं जहर यहां।
धर्म-जात-भेद भुलाकर, एक हैं सब सच बताइए।।

नभ में तिरँगा लहर रहा, तभी तक हैं धर्म और देश।
आजाद हिंदुस्तान के लिए, जांफ़रोसी सिखलाईये।।

राम-अल्लाह-नानक-ईसा, सत्य धर्म के प्रतीक हैं।
ईद-दीवाली-गुरु पर्व..क्रिसमस भी सब मनाइए।।

युद्ध डंका बजा दो

(एक वीर गीत)

खून के बदले खून से अब, हमको इन्कार नहीं होगा।
कोई समझौता पाकी से अब स्वीकार नहीं होगा।।

छुप छुप कायर घात लगाकर तुम बारूदे झोंक रहे।
अणु बम फेंक के ध्वस्त करेंगे, वार पे वार नहीं होगा।।

बहुत हो गई सुलह की बातें, सेना अब आज़ाद करो।
चढ़ कर नेस्तनाबूद करे, अब युद्ध हो प्यार नहीं होगा।।।

आ जाए मैदान में बैरी, पाकी (आतंकी) एक न छोड़ेंगे।
अब नापाको के घर कोई, तीज त्योहार नहीं होगा।।

पानी सर से ऊपर हो गया, पी.एम अब निश्चय कर लो।
आक्रमण-आदेश दो सीधे, अब ललकार नहीं होगा।।

वीरों की बलि बार-बार, अब सहन की सीमा से बाहर।
खत्म करें जमात आतंकी...औ पैदावार नहीं होगा।।

बन बारूद का तूफ़ान

(एक वीर गीत)

शहीदों की लहू हूँ मैं, भारत की बेटी हूँ
दूल्हा न मेरा ढूंढो, मैं शपथ ये लेती हूँ,
पापा न बनूं दुल्हन, ससुराल न जाऊंगी
बन बारूद का तूफ़ान बैरी से लड़ने जाऊंगी।।
तुम करो पीड़ितों की सेवा, मरहम बनकर के
ध्वजा तिरंगा हिमगिरि पर मैं जा फहराऊंगी ।।

बेटी आजादी की, दुलहन न बना करे
झांसी की रानी सी, दुर्गा सा रूप धरे...
वतन को गद्दारों, और पापी से बचाने को
जाबांज़- सिपाही का, वो जिम्मा धरा करे
सरहद पर जाकर के, घमासान मचाऊंगी
हिन्द शत्रु के काट-काट कर, सर ले आऊंगी
दादा की तरह मैं भी फ्रंट में लड़ने जाऊंगी
तुम करो पीड़ितों की सेवा मरहम बनकर के
ध्वजा तिरंगा हिमगिरि पर मैं जा फहराऊंगी।।

वीरों के संग संग मैं, कदम मिला करके
भारत की सीमा पर ...पहरेदारी कर के
भीषण तूफानों से, बारूदी- धमाकों से
दुश्मन कांपे रणचंडी, से थर-थर थर-थर के

बैरी के लिए मैं महाकाल सी बन ही जाऊंगी
आतंकी खून से, अपने खड्ग की प्यास बुझाऊंगी
दादा की तरह मैं भी फ्रंट में लड़ने जाऊंगी
तूम करो पीड़ितों की सेवा मरहम बनकर के
ध्वजा तिरंगा हिमगिरि पर जाकर फहराऊंगी।।

नापाक पाक के हत्यारों के सिर पर चढ़ कर के
अन्यायी, जयचंदों की नीयत को पढ़कर के,
भाषा रायफल और तोप की बस जो जाने हैं
छल-धोखे से वार करें हरदम बढ़-चढ़कर के,
उन सबके दिमाग ठिकाने पर मैं लगाऊंगी
माँ भारती का आँचल ..दुश्मन से बचाऊंगी
दुल्हन न बनूंगी मैं, ससुराल न जाऊंगी।
दादा की तरह मैं भी फ्रंट में लड़ने जाऊंगी।।
मैं फूल तुम्हारे गुलशन का, अंगार बनूँगी
असुर संहारक काली...सीमा पार बनूँगी,
घात लगाकर जो ...वीरों को काटते हैं
धोखे से भारत को मजहब में बाँटते है
उन नीच-लालची-हैवानों को धूल चटाऊंगी
टुकड़े-टुकड़े कर के, रक्त की नदी बहाउंगी।
ध्वजा तिरँगा हिमगिर पर जाकर फहराऊंगी।।

पापा न बनूं दुल्हन, ससुराल न जाऊंगी
दादा की तरह मैं भी, फ्रंट में लड़ने जाऊंगी,

थर- थर काँपे शत्रु, दुर्गा बन जाऊंगी
ध्वजा तिरंगा.. हिमगिरि पर जाकर फहराउंगी ।।

जीना हो देश के लिए

माँ बाबू जी के बदन का हिस्सा हूँ
आज़ाद हिंदुस्तान का किस्सा हूँ
हिंदुस्तान की माटी से बनी कहानी हूँ
हिन्दू न मुसलमा न सिख ईसाई
भारती का बेटा ...बस हिंदुस्तानी हूँ.....
अब तक लिखता था गीत-ग़ज़ल-कविताएं
अब लिखूंगा सरहद..वीर...शहादत की कथाएँ....
अबकी बार जो घात लगाएगा दुश्मन
मेरे वीरों के एक खरोंच भी लगाएगा दुश्मन
कसम माँ भारती की....
उसके खून से लिखकर कविता...
चारों दिशाओं को
मुस्कुराती फिजाओं को
महकती हवाओं को
झूमती लताओं को
बल-खाती नदियों को

कल-कल बहते झरनों को

हिमालय के चरणों को...

लाल कर दूंगा.....

अब नहीं सहूंगा....

आतंकी मंजर को

धमाकों के खंजर को

लुटती-पिटती मांगों को

छाती पिटती माओं को

बिलखते बच्चों को...

आतंक की गर्दन उमेठ कर काल कर दूंगा....

खौल उठा है रग-रग मेरा

देखकर...

ए के छप्पन की नलियों को

बारूद की महक भरी गलियों को,

आतंकवादी नारों को

खुले फिरते हत्यारों को...

बारूद के बाजारों को..

लाशों में तलबगारों मो....

अब इनको नेस्तनाबूद कर दूंगा....

तुम भी चुप न रहना देखकर---

सिसकते हुए बचपन को

बिकते हुए यौवन को

बुजुर्गों के साथ अत्याचार को
देश मे फैले भ्रष्टाचार को
फांसी लटकते हुए किसान को
सरहद पर लाल जवान को
भूखों मरते बेरोजगार को
घोटालों के अंबार को....
उठाकर पत्थर कुचल देना कुसूरवार को....
मत लिखो अब कविता
मेनका के केशों पर
रम्भा के भेषों पर
बल खाती कमर पर
सोलह की उमर पर
यौवन की दहलीज पर
राखी और तीज पर,
कजरारी आँखों औ.. काजल पर
पांवों में खनकती पायल पर...
बल्कि भूख, पीड़ा और शहादत लिख दो...
अब लिखना बस....
सरहद की सांस को
जाबांज के प्रयास को
जयचंदों के बाहुपाश को
दोगलों के नागफांस को
षड्यंत्र आस-पास को...

और मिटा देना दुश्मनी के बीज के आकाश को

और लिखना शहीदों को नमन

सीमा पर अड़े वीरों का वन्दन

अन्नदाता किसान के माथे का चन्दन

देश धर्म के लिए जीने वाले हर आदम का अभिनन्दन..

और शत्रुओं का करुण क्रन्दन...

जय माँ भारती......

हिंदुस्तान गाया करो...

राह में जब चलो मुस्कुराया करो

मन्दिर, मस्जिद भी हो आया करो...

दुर्गा माता बिराजी है कश्मीर में

तीन सौ सत्तर रावण जलाया करो...

अब भारत माता का जय घोष कर

कतार-ए-तिरँगा फहराया करो.....

पुरसकूँ हो जो अपना घर-औ-कारोबार

झोपड़ी बस्तियां देख आया करो...

गर खुदा ने है बख्शी दौलतें खूब तो

किसी बेबस का सर सहलाया करो....

हंसो खूब-भर पेट खा-नींद लो
बैंक बैलेंस न ज्यादा बढ़ाया करो....

शुक्र मानो खुदा का, न शुगर-बी.पी
खूब कसरत करो और कराया करो....
एक दीवार पे चार खाने बना,
ओउम-अल्लाह-यीशु-गुरु बनाया करो.....

बैठ छत पर सुबह, गुरुग्रन्थ-बाईबिल
कुरआन-रामायण भी सुनाया करो.....
शाम मिश्री से स्वर ..आरती औ अज़ान
जय जय हिंदुस्तान ...भी गाया करो.......
जय जय हिंदुस्तान..........

हम हिंदुस्तानी

चाहे हिन्दू-मुस्लमान हो,
चाहे सिख-ईसाई।
जितने सारे लोग हिन्द में,
हिंदुस्तानी भाई।

हरियाली व् त्याग शांति का,
एक मिशाल है हिन्द देश।
अनेक जाती पर हिन्द धर्म,
अद्भुत यहाँ का है परिवेश।।

उत्सव चाहे राम रैली हो,
चाहे ईद जुलुश हो।
मेरे गांव के सारे बेटे,
सहिष्णुता से ख़ुश हो।।

हम चाहे जिस जात-धर्म के,
माँ भारती के लाल।
सम्पूर्ण विश्व के गौरव हैं हम,
धर्म एकता की मिशाल।।

दया -क्षमा का भाव जहाँ,
बसता सकल ह्रदय है।
भारत के हर वरद पुत्र की,
प्रवृति हिंदी मय है।।

चलो प्रेरना हम बन जाएँ,
बस मानवता का अलख जगाएं।
जाती-धर्म-रंग-भाषा अलग हों,
हिंन्द जन एक, जग को दिखलाएं।।

तिरँगे के खातिर मरा कीजिये

कभी जल्दी नहीं फैसला कीजिये,
कुछ समय सोच कर, तब कहा कीजिये।।

जब भी मुश्किल घड़ी सर पे मंडराए तो,
बुजुर्गों से तब.... मशवरा कीजिये।।

देश की बात हो...घर में आपात हो,
खुद न कर...माँ-पिता का कहा कीजिये।।

दिल मायूस हो जब ...कोई पीर हो,
सौंप कर के खुदा को..रहा कीजिये।।

ज़ीस्त के दिन हैं तय, बस जिया कीजिये,
न दौलत इकट्ठा.... किया कीजिये।।

हुआ जन्म धरती पे,....सब एक से,
जात-मजहब से दूरी...रखा कीजिये।।

हिन्द भूमि में बेटा ...जिया हो अगर,
तिरँगे के खातिर ...मरा कीजिए।।

जन गण गावा

जनगण गावा अतिसुख पावा,
हरसि हिया से ध्वज फहरावा।।
जबहु त, बैरी कपट लगावा,
तबहु त वीरो मार भगावा।।

तीन सौ सत्तर निपट गया है,
कट कितनों का टिकट गया है।।
काश्मीर आराम से सोवे,
पत्थर दिल अब कोई न होवे।।

फहर तिरँगा चौबीस घण्टे,
मन्दिर-मस्जिद, नमाज़-घण्टे।।
अब पूरी आजादी तुमको,
पण्डित मुल्ला सबको हमको।।

ऐसा धमाका दिल्ली मे कर दो,
न्याय विधान को सरल कर दो।।
हर ऑफिस लगा दो कैमरे,
भ्रष्ट को करवाओ कैबरे..।।

सैनिक सरहद पर

सैनिक ....

सरहद पर

अटल-अडिग-अलंघ्य

दीवार बनकर देश की रक्षा को

लहू प्राण से तत्पर है....

वो माँ बाप के लिए नहीं

बीबी बच्चों का भी नहीं...

किसी भी दिन

आंसुओं से तर..

तिरँगे में लिपटकर

लौट आएगा....घर.....

शव दाह कर ..तेरहवीं करेंगे

परिवार के लोग

और रोएंगे जन्म भर...

शहीद के परिवार कहलाएंगे.....

कोई भत्ता--बोनस...

कोई लाल ...पीली बत्ती की गाड़ी

या कोई बयां लायक ओहदा..

तो देंगे नहीं हम उनको..

बल्कि... ठीक

देश की पीड़ा

दुनिया और उसके दिल का दर्द...सड़कों-अस्पतालों-
स्कूल-न्यायालयों की छाती का दर्द....
की तरह---भुला दिए जाएंगे..!?
कैंडल जलाकर....
कड़ी निंदा और टी.वी में डिबेट कर...!?!?!?
कौन करे बयां
सियासत के नुमाइंदों की करतूतें
कि....अवाम के हाथों तुरन्त तलवार हो!!!!
कौन करे फिर एक सबको.....
कि हर हिंदस्तानी ...तिरँगे का रखवार हो!!!
दुनिया के क्षितिज को रौशन कर
नव विहान कौन बांटेगा...
लोहे को फौलाद और..फ़िर ...तपा तपा कर कुंदन कौन करेगा....!?
हर कोई अपना बच्चा
कलेक्टर.. डॉक्टर.. बनाएगा
बुद्धिमान...आदमी
नेता-मंत्री...बाबा बन जाएगा..
कल कौन अपने बेटे भेजेगा सीमा पर...!?
तिरँगा कब तक फहरेगा गगन पर...?!
चिंतनीय है..!!..??..!!

बाल-वीर देश गीत

वन्दे मातरम गाऊंगा
देश ध्वजा फहराउंगा,
मैं सरहद पर जा, बैरी के
शीश काटकर लाऊँगा।।

भारत मेरी माता है
मैं सपूत बन जाऊंगा,
जान हथेली पर ले कर मैं
सीमा पर डट जाऊंगा।।

बच्चा हुँ पर सच्चा हूँ
कभी न खाया गच्चा हूँ,
चाहे प्राण रहे या जाए
सरहद पर अड़ जाऊंगा।।

टेढ़ी नज़र करे जो भारत
आँख फोड़.. वो लाऊँगा,
बाहर-भीतर जयचंदों की
घातें विफल कराऊंगा।।

छल कर धावा बोलेगा
दुश्मन मार गिराऊंगा,
भारत माँ को पाक शत्रु के
खून से मैं नहलाऊंगा।।

एक अकेला और निहत्था
मैं भारी पड़ जाऊंगा,
अंत सांस तक लिए तिरँगा
वन्दे मातरम गाऊंगा।।

ध्वज पर न्यौछावर हम

(देशभक्ति-कव्वाली)

दुश्मन भी घर आए तो दोस्त सा सम्मान देते है....
प्रेम से मांगे कमरा तो पूरा मकान देते हैं...
पर लहराते तिरँगे पर टेढ़ी आँख करे कोई...
तो चीर कर छाती लहू प्रान ले लेते है..........
जय भारती जय भारती जय भारती---।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।

फौलाद का दिल-हौसला चट्टान रखते हैं
माँ भारती के कदमों में हम जान रखते है,
हर एक कतरा लहू का ध्वज पर निछावर है
सर पे कफ़न रग-रग में हिंदुस्तान रखते हैं।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।

अब घुस के देखो चीन पाकिस्तान मेरे घर
खुले हुए हैं वीरों के बन्दूक औ तेवर,
जांघो में देती थाप अब कश्मीर की गलियां
जिंदा न छोड़ें एक भी ...जुबान रखते हैं।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।

फूलों की वादीयो को श्मशान बना रख्खे थे
नाजुक प्रदेश लूटने अरमान बना रख्खे थे,
हिंदस्ता के शेर तब नियम से बंधे थे....
हर बखत अब बारूदी.... सामान रखते हैं।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।

तुमने जो मारे धोखे से अब तक हमारे वीर
दिल मे छुपा रख्खे हैं बदले भावना के तीर,
पर हम नहीं कायर जो गोली... पीठ मारेंगे
घर घुस के.. नेस्तनाबूद पाकिस्तान रखते हैं।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।
जय भारती जय भारती जय भारती---।।

एक बार हमको छूट जो मिल जाए तो समझो
पल भर में ही नापाक पूरा साफ ही समझो,
बारूद की भट्ठी है हम ...विस्फोट जो हुए
हिम्मत- मिटाने... पाक के ..निशान रखते है।।

देश हमारा

देश हमारा भारत देश।
न्यारा है यहाँ का परिवेश।।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई।
मिलकर रहते चारो भाय।।

सतसंग की है बहती धार।
धर्म कर्म के सदा विचार।।

निश दिन होते है त्यौहार।
जीते सब खुश अपरम्पार।।

मन्दिर मस्जिद औ गुरुद्वार।
चर्च भी, सारे धर्म के द्वार।।

पग पग पर हैं जाति अनेक।
देश धर्म यहां सब के ऐक।।

सकल विश्व है, इसको निहार।
पावन पुनीत यहां संस्कार।।

साधु संतों का पावन वेश।
गर्व हमें है अपने देश।।

जय जननि, जय भारत माँ

(एक वीर गीत)

उठो सपूतों देश के दुश्मन को, अब तो पहचानो भी
अपने घर पी दूध पल रहे, संपोलों को जानो भी।
शिक्षा के मंदिर के प्रांगण, बैरी की जयकार करे
ऐसे द्रोही और कपूत के, गर्दन झट तलवार करे।

देश के माथे से कलंक के, दाग अभी हटाना है
चुन-चुनकर माँ के दामन के, घाव तुरत मिटाना है।
अब भारत माँ के आँचल को लाल नहीं होने देंगे
अब अवाम बैरी हमलों के, गाल नहीं होने देंगे।

ये वो मुल्क है वीरों का जहाँ वीर शिवाजी होते थे
मुगलों की भारी सेना के दिल थर-थरथर होते थे।
महाराणा प्रताप की भूमि सुन जिनकी ललकारों को
छक्के छूटते बादशाहों के सुन उनकी हुंकारों को।

लक्ष्मी बाई तात्याटोपे की खून से यह भू सींची है
अंग्रेजो की छाती में लक्षमन रेखा जो खींची है।
भगत, राजगुरु, सुखदेव ने हंस कर अपनी जाने दी
उस धरती में तुम हम जन्मे, माटी है बलिदानो की।

चाहे शिक्षक मौलवी पंडित डॉक्टर हो या वकील
खड्ग उठा लो द्रोही काटो, ताबूत में ठोंको कील।

नाम कन्हैया काम कंस के देश को डसते दानव
गद्दारों का दहन करो, मत मानो इनको मानव ।

अभी त्याग दो मुखियाओं तुम भाषण और विदेश भ्रमण
धर्म धरे भारत के लाल, लाल कर दो तुम दुश्मन।
लो शपथ एक खोएंगे लाल तो एक लाख मारेंगे
उठी आंख जो माँ भारती पर, उसका शव जारेंगे ।

नापाक इरादे छु न पाऐं, भारती के आँचल को
ढूंढ-ढूंढ कर शीश काट दो, असद और अफजल को ।
ये रक्त है भारत माता का जो रग-रग में बहता है
देश-द्रोहियों शत्रु को क्यों, आँगन में सहता है !

समय आ गया हिन्द पुत्र अब युद्ध का शंखनाद करे
हर बेटी लक्ष्मी बाई हर बेटा ..स्वयं आज़ाद करे ।
मातृभूमि को धर्म बना लो, प्राण हैं जैसे छाती में
बलिदानो से रक्त सींच कर, मिला है जो कि थाती में।

सत्ता के भूखे नंगों, औ आस्तीनों के नागों का
पकड़ कुचलना फन होगा अब गद्दारो के बापों का।
शेर सिपाही सुनो देश के जब भी तुम गद्दार धरो
या दुश्मन-सीमा पर घुसते कोई बदनीयतदार धरो।

मत सौंपो कानून कोर्ट को शीश काट कर ज्वाला दो
भारत माता को शत्रु नहीं, शत्रुमुण्ड की माला दो।

हर घर में आज़ाद बोष हैं लाला हैं बिस्मिल्ला हैं
फिर क्यों रोज हमारे घर, घुसते सुवर के पिल्ला हैं।

सोचो हम सब अपने घरों में चुप्प शांति से सोएंगे
सरहद पर माँ के सपूत, हो लाल भूमि पर होवेंगे ।
जाग रहो ओ याद रखो हम सभी देश के प्रहरी है
तब काटेंगे दुश्मन की, बारूदी चालें गहरी हैं।

बस जवान औ वर्दी की मत समझो जिम्मेदारी तुम
सभी हिन्द जन सजग रहो और करो भी पहरेदारी तुम।
टोपी, वर्दी, टी.वी आँखो मुँह की कही को दागो भी
नापाक हरकते तेज हो रही हिन्द पुत्रों अब जागो भी।।

नमन बोस-बापू-अब्दुल को

आजाद हिंद फौज की रचना किये सुभाष
स्वतंत्रता संग्राम में .....आगे रहे सुभाष

बेड़ियां जकड़ रहीं, फिर से सुभाष चाहिए
इंग्लिश की बेलि फैली, हिंदी की बास चाहिए,

राष्ट्र भाषा आज... किताबों सुबक रही
नवोदितों के दिल-दिमाग अंग्रेजी पनप रही,

अनेकता में एकता की अब तलक मिशाल थी
चार धर्म चार वेद है भारती हृदय विशाल थी,

नव जनों ने युग- युगों की पवित्रता बेच दी !
पश्चिमी सभ्यता समक्ष अपनी रिवाजें फेंक दी !!

मुश्किल है पर सम्भव अकुश लगा ले हम
विश्व गुरु वरन कलप के तोड़ देगा दम......

जन्मे जहां वो गांव घर प्रदेश -देश है
जन्म भूमि ही हमारा सत्य वेश है......

भारत सा कोई आज भी दुनिया में नहीं देश
अंग्रेज सारे आ बसे है धर्म के परिवेश--

ओ नव युवा-नव पीढ़ियों चमक में न जाओ
भारत भूमि की धन्य परम्पराए उठाओ...

सुभाष, भगत, खुदी, शेखर, पटेल, बिस्मिल्ला
बनो तो गांधी, इंदिरा, अटल, कलाम अब्दुल्ला।।

अभी और बेड़ियां बाकी हैं

एक आँधी सी आई, जब हिन्द शेर गरजे
टूट गई सब बेड़ियां हिन्दुस्तानी हरषे,
सत्तर सालों से सहते थे, अंग्रेजों का कानून
पूरी हुई आजादी ..अ 35 से भी छूटे....
अभी बस नहीं करना..अभी और बेड़ियां बाकी है।।-।।

और एक वचन निभाना है, मन्दिर हमे बनाना है
जात धर्म के झगड़े सारे, जड़ से हमे मिटाना है
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वार चर्च एक कमरे में हों
हिंदुस्तान को "एक धाम" बनाना है.......
अभी दम नहीं धरना..अभी और बेड़िया बाकी है।।-।।

आज भी बारूद बिछी हुई है राहों में
युवा दिशाहीन खड़ा हुवा चौराहों में,
घूस व भ्रष्टाचारों उखाड़ जो फेंकेंगे
तब संभलेगा... देश सुरक्षित बांहों में......
अभी सन्तुष्ट न होना..अभी और बेड़ियां बाकी हैं।।-।।

पहले राजा बादशाह व गोरे होते थे
असहायों पे अत्याचार हमेशा होते थे,
अब तो जनता राज है.. "वर्ग" समापन हो
आर्थिक असहाय को सरकारी आरक्षण हो....
अभी न मूंछ ऐंठना..अभी और बेड़ियां बाकी है।।-।।

जयचंद-कंस-डलहौजी-रावण-बाबर भी
पुलिस-प्रशासन-न्यायालय में बैठे हैं,
जनता आज भी बिलख रही है-पीड़ित है
न्याय की सत्ता-धर्म राज भी लाना है....
अभी बस नहीं करना..अभी और बेड़ियां बाकी हैं।।-।।

तिरंगे से प्यार कर लेना

पेड़ पौधों से प्यार कर लेना,
सांसो की बयार कर लेना।
जल जंगल जमीन जब तक है,
जीने का तुम त्यौहार कर लेना।।

CO_2 सोख O_2 बांटेंगे,
साँसों की तुम बहार कर लेना।।
तिरंगे से प्यार कर लेना,
देश पर जां निशार कर लेना।।

मुल्क के काम आके, मरके तुम,
शहादत की मीनार कर लेना।
वतन की आज हिफाज़त करते,
दुश्मन की नश में वार कर लेना।

नाग आस्तीनों के जो डसते हैं,
उनका जहर उतार कर लेना।
देशी जयचंदों के फितरत को तुम,
भांप..निष्फल बेकार कर लेना।।

कोई उजड़ा हुआ गुलशन जो मिले,
बांट अपना...सँवार कर लेना।
देश-माटी के लिए जब जब भी,
मिले मौका...हज़ार कर लेना।।

मिले जो काफिरों की बस्ती तो,
बारूद...बार-बार कर लेना।
जब तलक सांस..आदमियत के,
किस्से तुम भी शुमार कर लेना।।

खेत किसान, सीमा पर प्रहरी,

पहरा तुम घर-बाज़ार कर लेना।

कोई अस्मत से खेले तो..खंज़र,

उसकी छाती के पार कर लेना।

ओढ़ तिरँगा घर आया

आसमान का सीना दहला, जब जयघोष उच्चारे हैं,

"ओढ़ा तिरँगा" जय भारत के लगते जब-जब नारे हैं।

भारत भूमि में जन्मा, भारत भूमि में लाल हुआ,

सीमा की रखवाली करते, वीरगति को लाल हुआ..।।

मात पिता-छू चरण, पत्नी को अभी आया कह गया हुआ,

तिरँगे की आन बान को वह सरहद पर खेत हुआ।।

सीने पर गोली खाई, जय हिंदुस्तान उच्चारा था,

धरती पर गिरने से पहले सौ नापाकी मारा था।।

तोप टैंक ए के छप्पन का किया सामना वो जमकर,

सीमा हुआ सुरक्षित, भागे आतंकी जो थे बचकर।।

अंतिम सांसो में भी तिरँगा गाड़ दिया उसने हिमगिर, कि

जय हिंद कह हिन्द गोद में अंतिम हिचकी ली थी फिर।।

छाती पर फिर लिए तिरँगा, माता पिता के घर आया,

बजे बिगुल-और सात सलामी, जीत हिन्द लेकर आया।।

सूने नैन की बरसातों से सातों सागर हारे हैं,
तब..शहीद की बेबा ने जब, मंगल-सूत्र उतारे हैं...!!
धरती-पाहन-पर्वत रोए आसमान भारत रोया,
आज़ादी के रखवाले सच्चे सपूत हमने खोया।।

वीरों की धरती है मेरा हिंदुस्तान

वीरों की धरती है मेरा हिंदुस्तान,
लहू सींच कर गाते हैं, हम जन गण गान।।

हरदम दिल में रखना उन वीरों की याद,
मातृभूमि के लिए जो त्यागे हंसकर प्रान।।

वीर शिवा राणा लक्ष्मी का देश है ये,
भगत, राजगुरु, सुख की न भूलूँ बलिदान।।

मुगल आतंकी आये भारत लूट लिया,
ब्रिटिश आए और फूट डाल लूटा सामान।।

यहाँ सिक्ख-हिन्दू और मुस्लिम रहते हैं,
हिन्द के बेटे हिदुस्तानी एक हैं जान।।

पाकिस्तानी कुत्ते अब न आएं इधर,
सीमा पर हैं सजग शेर भारत जवान।।

धोखा छल और घात न अब कर पाओगे,

वीर खड़े हैं लिए हथेली अपनी जान।।

जिनके कारण हंसी खुशी और हैं त्यौहार,

उन वीरों की जांबाजी जाहिर जहान।।

जन्मभूमि की माटी तिलक लगा करके

हो जाते जो देश के खातिर हैं कुर्बान।।

मैं भी जन्मा हूँ वीरों की धरती पर

गर्व है मुझको, देश है मेरा हिंदुस्तान।।

वीरों को नमन

हम तुम जलाए होलिका
मस्ती में, अपनो संग, सुरक्षित
रंग-राग-फ़गुवा में नहाए.......

वो जंगलों में, असुरक्षित
अवाम की सुरक्षा और
चैनो-शकुं के लिए अपना खून
बहाये.....

आसमाँ का सीना दहला
धरती की छाती फटी
पर प्रदेश मदमस्त रहा.......
बहादुर जवानों की

चिता धधकती रही
टोपी..सरकार बनाने में ब्यस्त
रहा...
असहाय माँ-बाप, भाई-बहन
बिलखती बीबी और
अबोध बच्चों की करूँ
चित्कार....

देश भुला शत्रु की गोली खाते
मरे वीरों को, और....कर रहे
जीते लोगों का स्वागत सत्कार.....

मंत्री मरने पर समारोह बंद
तिरंगा झुक, शोक सभा
वीर शहीद पर..त्यौहार..!
कश्मीर से कन्या कुमारी

हिमगिरि से बस्तर जंगल
हम भूले... जां-निशार....!
हम डूबे रहे फाग उड़ाने
वो कुर्बान..अमन बचाने

सदर.. कुर्सियां चुनते.....
ग्यारह परिवार..चढ़ गए
बलिवेदी पर..अवाम के लिए
जीने के...सपने बुनते-बुनते....!

शहीदों को श्रद्धा सुमन....!!

सीमा के निगहबानों को सौ-सौ सलाम है

सीमा के निगहबानो को...सौ सौ सलाम है
चौकस अड़े जवानों को...सौ सौ सलाम है।।
अमन के रखवालों-आज़ादी-पहरेदारों को
देश पे कुरबानो को....सौ सौ सलाम है।।
अवाम सुख से सोता है वो पहरे पे होता है
सीने में गोली खाकर, जननि की गोद सोता है
माटी को सौंपी जान को..सौ सौ सलाम है।।-।।

परिवार और देश में जो, देश को चुन लेता
तन मन की सारी खुशियां वतन पे वार देता,
अपनी जवानी-उमंगे सभी को मार देता
आँधी-तूफां में भी अड़ा जो अपने काम है...
सीमा के निगहबानों को सौ सौ सलाम है।।--।।

थाम के जब तक खड़े हैं राष्ट्रध्वज हमारा
बैरी न कर सके है बाल बांका हमारा,
बर्फ में अग्नि में बरसात ठंड में
खड़े अडिग परवाह न अपने अंजाम है....
सीमा के निगहबानों को सौ सौ सलाम है।।-।।

निज रक्त से तिलक जो भारती का किया करते
अवाम की रक्षा के लिए रोज रोज मरते,
भूखे-प्यासे सरहद की चौकसी में जीते

शत्रु हो करोड़ो में भी अकेले लड़ जाते,

जब तक बदन में सांस है करते संग्राम हैं

हिन्द के सपूतों को ...कोटि प्रणाम है....

सीमा में निगहबानों को सौ सौ सललाम है।।--।।

जय हिंद...जय हिंद के बेटे..

देश की पीड़ा-समस्या, एक होकर मेट दो...

बुझाकर आस का दीपक, मत बैठे रहो जी........ माँ कसम,

सुजाकर आंख भीगे मन, मत बैठे रहो जी...... माँ कसम।।

जिसने राह रोकी-गम दिया, हलक में उंगली डाल कर,

निकालो रास्ते और बदनीयत को मार दो जी.....माँ कसम।।

बस बातें-कहानी, बहश में, मशगूल रहना छोड़ दो

उड़ाने फूंक से, तुम चीन-पाक, छोड़ दो जी माँ कसम।।

मंत्री अफसरों -नेताओं के बारे जितना बोलते,

छाती की वही बारूद सीमा पर पहुंच कर खोल दो जी मां कसम।।

कुछ मोदी के तो कुछ सोनिया के हाथ धो पीछे पड़े,

हिन्दुस्तानी होकर शत्रु के पीछे पड़ो जी मां कसम ।।

लाखों बीघे पड़े है खेत और जमीन बंजर देश मे,

बिन फोटो खिंचाए पौध रोपो हरी-धरा करो जी मां कसम।।

बेटीयों के बारे सभाओं में पेलते भाषण हो सब..
गांव-गलियों की गरीब बेटियों को सम्बल बनो जी मां कसम।।
भाषा चाहे हो अलग, कानून और झंडा अलग मांगों नहीं...
एक होकर आपदाओं-शत्रुओं से जीत लो जी मां कसम ।।

शीर्ष पर शेख-सदरों मत लड़ो, आपस में हिन्द पूत हो
बस्तर या जम्मू कश्मीर, बांट लो जी मां कसम।।
चुनाव के दिनों में अपनी अपनी पार्टी के राग गाओ।
समस्या देश की एकजुट होकर मेट लो जी...मां कसम।।

रुको नहीं झुको नहीं

मंजिलें..रुको रुको..कि, हम हैं आ रहे
बिन हमारे तुम भला, कहीं के ना रहे !
सोचो अगर हम न हों, तो तुम भला क्या हो
राही के बिना रास्तों की क्या बिसात है !

जाना कितनी दूर है, मैं सब्र क्यों करूँ
फड़क रही भुजाएं हैं, मंजिल भी पास है।
भाग्य और किस्मतों की बातें फेंकिये
हौसले के साथ हर मुश्किल आसान है।

सरहदों में हिन्द-वीर हैं गरज रहे
दुश्मनों की छाती में दिल सुनसान है।
बारिशों ने ढहा दिए पटरी-पूल-सड़क
हिम्मतें औ रास्ते ढही न ही बही !

शामतें जितनी भी आए, रगों में जोश भर
हिम्मतें-मर्दे-खुदा बुजुर्गों ने कही।
रुको नहीं झुको नहीं डगर-गढ़े चलो
अपने पास जो है जरा बांटते चलो।

कोई न भूखा-असहाय, बेघर न हो कोई
अमीरी- गरीबी की खाई पाटते चलो।
अपनी गली-गांव-शहर-देश एक है
हिन्दुस्ता के सारे लोग रक्त-एक है।
पार्टी-मजहब-औ-वर्ग के पुलिया जो ढहा दो
समृद्ध-औ बलवान मेरा हिन्द देश हो !!

सैनिक सींचते हैं खून

सैनिक सींचते हैं सरहदों में रोज अपना खून,
फिर भी क्यों नहीं उगता वतन से इश्क़-ए-जुनून !

सीमा पार बैठा साजिशें करता रहा दुश्मन,
घर पर बैठ हम तैयार करते बहश के मजमून !

सिपाही पर है छोड़ा हिफाज़त, मंत्री पे सारा देश,
हम बेफ़र्ज़ हो मशगूल दावत ठूंसते दो जून !

दिखाते हिन्दू-मूसलमां की बेटी लाज से लूट गई,
नहीं कि, देश की बेटी चढ़ी फिर..वहशी के जुनून !

तिरँगा सब्र खोता, पूंजी-सत्ता-ताकतें हँसतीं,
वतन के फ़र्ज़ भूले, दौलतों के आये है मानसून !

वीर आल्हा छंद

सुमिरन करके मात-पिता को, ईश्वर-अल्लाह करूँ प्रणाम
हिन्द देश का मैं हूँ बेटा, तन मन धन माटी के नाम,
आल्हा राणा वीर शिवा औ, लक्ष्मी बाई करूँ जुहार
भगत, राजगुरु, बिस्मिल, शेखर बलिदानी से हमको प्यार,
सीमा की रखवाली करते, वीर पुत्रों को नमन हमार
देश की खातिर जो मर मिटते, जाबांजो को दिल से प्यार,
देश बचाते सैन्य सिपाही, और जो सबको भोज्य जुटाय
वीर सिपाही और किसान को, दिलीप हरदम माथ नवाय,
अब चल सरहद से हो आऊँ, जहाँ अड़े हैं वीर हमार
हम सब भी हों साथ जो उनके, लेकर टॉप तीर तलवार,
कभी न दुश्मन धावा बोले, या धोखे से करे न वार
युवा देश कस कमर खड़े हों, जब हरदम हर पल तैयार,
बाल न बांका होय देश को, शहीद न होए कोई वीर
शत्रु मारने छूट हो पूरी, चुन-चुन छाती छेदूँ तीर,
याद रहे जब सीमा सुरक्षित, और तिरँगा लहरत जाय
हिन्दू मुस्लिम-मन्दिर मस्जिद, तब तक अल्ला हो अकबर-आरती गाय,
वीर वंश के हम तुम वंशज, हिंदुस्तान है देश हमार
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, ध्वजा तिरँगा से है प्यार,
इसकी आन पे मर मिटते हैं, चाहे प्राण रहे या जाय
बैरी घात करे जा जब भी, कब्रिस्तान उसे पहुंचाय।।

दुश्मन के घर घुसकर मारें, धोखे से करता जो वार
मक्क़ारो का माफ न करना, रक्त को चाहे छूटे धार,
बादल बन कर गरज पड़ूँ कि, भागे पाकी सुन ललकार,
बिजली बनकर टूट पड़ूँ कि, मुंह की खाए बारम्बार।।
टैंक-तोप-बारूद उड़ावें, चलती गोली की बौछार
हिन्द के शेर नहीं डरते हैं, चाहे बल हो शत्रु अपार,
राम रहीम ईसा दिल में हैं, गगन तिरँगा फहराता जाय
विश्व गुरु का मान विश्व में, आसमान पर लहरत जाय।।

जय हिंद....जय भारती

चौकीदार

चौकीदार कौन है....

हर कोई कहता मैं चौकीदार...!!

वैसे गलत नहीं कहता...

कोई अपने जायदाद का चौकीदार है...!!

कोई अपने खेमे का...

कोई अपने माल असबाब का

तो कोई अपने खातों का....

कोई अपने फैक्ट्री का

तो कोई अपने व्यवसाय का...

कोई अपने बीबी बच्चों का

तो कोई अपनी बिरादरी का...

कोई धर्म का तो कोई जात का...!

असल मे ये चौकी नहीं....ठेकेदार हैं....

वतन का चौकीदार तो बस वही हैं...

जो दिन रात...सरहद पर शत्रु से

और भीतर गद्दारों से बचाने देश हित..

मौन होकर है हर वक़्त चौकस

तन से मन से जीवन से..देश को समर्पित....।

तिरँगा लहराए

घर घर में तिरँगा लहराए,
हर दिल में तिरँगा लहराए।।

खून से सींची आज़ादी,
अजर-अमर हो लह लहाए।।

शहीदी की भस्म न ठंडी हो,
इंकलाब नहीं बुझने पाए।।

भारत के बेटे खेत हुए,
सरहद न सियासत हो पाए।।

देश सुरक्षा सर्वप्रथम,
मजहब-पार्टी भाड़ में जाए।।
माँ भारती को नमन...!!

कन्या कुमारी से कश्मीर तक हमारा है

कन्या कुमारी से कश्मीर तक हमारा है,
यहाँ की वादी में जन्नत का जो नज़ारा है।।

पाक की जिद्द है उसे हमसे छीन डालेगा,
उसे मालूम नहीं ये वीरों का शरारा है।।

अड़े खड़े हैं सिपाही सपूत भारत के,
जिनने बलिदान ने इस स्वर्ग को सँवारा है।।

चीन और पाक के नापाक जो घुस आते हैं,
बारम्बार सपूतों ने दुत्कारा है ।।

ये देश गाँधी भगत-शेखर-गुरु-बोस का,
जिन्होंने तन मन धन मातृ भू पे वारा है ।।

लक्ष्मी-प्रताप-बिस्मिल्ला और सुखदेव-गुरु,
शिवा के वंशजों से देश भरा सारा है..।।

हर एक भारती सिपाही हो अब भारत का,
"लहू-शहीद" ने हर एक को पुकारा है।।

याद कर जंजीरों को

याद कर जंजीरों को, मां ने जिसे बरसों सहे
काटते बन्धन करोड़ों, पूत कुर्बा हो गए,
पैदा हुए इंसान थे फिर कट गए तो बंट गए
तिलक हिन्दू, दाढ़ी मुस्लिम, सिख्ख पगड़ी हो गए,
वर्ग बांटा जात बांटी पार्टियों में बंट गए
गिरगिटों ने देश बांटी कुर्सियों में धंस गए !
हम बने हैं "हम वतन के शत्रु" आखिर किसलिए !
ओढ़कर काली चुनरिया बीज विष के बो रहे!
अपना लहू हम खुद बहाते, गोलियों-तलवार से
मातृ भू है भीगती बस, आंसुओं की धार से...!
जो हमें है काटते, विष-खंजरों की नोक से
छुपे हुए आस्तीन के नागों को तो पहचान ले..
हिन्दू-मुस्लिम औ ईसाई-आदिवासी एक हैं... !
एक शज़र की शाखें हैं हम, आदमी की जात रे..
अब भी जागो-चल पड़ो, कस कमर उस राह में
देश रक्षा-धर्म मानव, और न कोई चाह रे....
तक न औरों को सखे, धनुष की डोरी खींच ले
जो नज़र गड़ती वतन पे, वो नज़र ही फोड़ दे..
लो शपथ कि पथ न छोड़ें, मां के सारे घाव धो लें
गगन पे भारत ध्वजा...अनन्त लहराता रहे... !!

वीरों को समर्पित (मुक्तक)

लाल वही माते भारती के जु, अड़े हुए हैं हिम गिरी को सीमा,
आन औ बान को शीश कटावें जो, बैरी को काट बना रहे कीमा।
मातु के लाज रखे कर खातिर, आपन सुख सारो तज दीन्हा,
देश के खातिर जान दई अरु, हँसकर बारूद छाती पे लीन्हा ।।

एक हाथ में ध्वजा तिरंगा, एक हाथ तलवार,
पाकिस्तान को मैं देता हूँ सीमा से ललकार।
शीश काट कर वक्ष फाड़कर धरा लाल कर दूंगा,
भारत माँ को शत्रु मुंड़ो की पहनाऊंगा हार।।

सीमा पार चलकर, शत्रु को ललकार दूँ,
नापाक के षड्यंत्र, जड़ से मार दूँ।
आंख जो बैरी उठाए, मेरे तिरंगे पर,
उसकी छाती में तीर और आंख में तलवार दूँ।।

कायरता की निशानी, है छुप के वार करना,
मुश्किल है हिंन्द भू, शत्रु को पार करना।
आये तो सीना ताने, ललकारता अकेला,
भूमि बिछा न दूँ तो, बेटा न माँ का कहना।।

माँ भारती को शत्-शत् नमन

माँ भारती तुझको नमन, माँ भारती तुझको नमन,
वीर पुत्रों को नमन वीरांगनाओं को नमन ।।
तेरी गोद में जन्मे पले और गोद में ही खो गए,
जो लाल तेरे तेरी खातिर लाल होकर सो गए,
उन वीर पुत्रों को नमन, वीरांगनाओं को नमन,
जन्म दाता वीरों के माता पिता गुरु को नमन ।। -।।
मैं समर्पित तन करूँ मन धन करूँ जीवन करूँ,
शीश अपना कट कर माँ के कदम में क्षन करूँ,
एक अभिलाषा मेरी कि मात्रि भू के काम आऊं,,
स्वतंत्रता अक्षुन रहे रक्त मेरा बने चन्दन ।। -।।
हिन्द धरती लहलहाए मै समर्पित मन करूँ,
मात्रि भू संकट में हो, निज रक्त का चन्दन करूँ,,
भारती के शत्रुओं की छेद छाती रन करूँ,
जिस धरा में जन्म पाया, माटी को वंदन।।--।।
खुश नसीबी होगी मेरी जो वतन के काम आऊं,
बदनसीबी, देश के खातिर न अपना खून बहाऊ,
इस ह्रदय में बोस, बापू, भगत, गुरु और राय हैं,
दिलीप तिलक कर मात्रि भू को सौंप दूँ तन मन।।-।।
माँ भारती तुझको नमन माँ भारती तुझको नमन ।। ।।

याद रहता है

मुझे हर वक़्त मिरा देश भारत याद रहता है,
हरी धरती की मिट्टी और तिरंगा याद रहता है।।
शहीदों की शहादत को, कभी भी भूलता नाही,
भगत सुखदेव फांसी राज गुरु, सब याद रहता है।।

सियासत के लिये काटो न अपने भाई की गरदन,
विभाजन की कहानी का दर्द अब याद रहता है।।
कभी ये याद करते ही नहीं हैं पाँच सालोँ मेँ,
कि पिछली बार के वादे कभी कोई याद करता है।।

तिरंगे की कसम खाके कोई जब देश को घाते,
लहू तलवार गोरों और अकबर याद रहता है।।
कुर्सी-टोपी-वालों तुम कभी सरहद पे जा बैठो,
लहू बहा के गोली खाके, फिर क्या याद रहता है।।

संकट कोई आए या की शत्रु जब भी हमलावर
सिपाही हाथ बन्दूक "रोक" क्यों ! ये याद रहता है।।
द्रोही और बैरी मारने हो छूट वीरों को,
देखो फिर कोई नापाक हिम्मत कैसे करता है।।

भारत के बेटे (आल्हा छंद)

सुमिरन कर के मात-पिता को
देश की धूलि माथ लगाय।
नमन भारती-मात चरण में
अब सीमा पर चल डट जाये।।

फिर ललकारूँ पाक शत्रु को
पाकी सुनलो दिल को थाम।
चाहे जितने हमले करलो,
बाल न बांका होवे राम ।।

धोखे से बम बारी करिलो
चाहे जितना लो इतराय |
वीर सिपाही, चुन-चुन मारें,
दुश्मन चाहे करोड़ो आये।।

भरे -जोश में भारत बेटे
दुश्मन को देते ललकार |
काट काट मुंडी धर देंगे
सामने आ कायर-गद्‌दार।।

जब तक सूरज चाँद रहेगे
गगन तिरँगा यूँ फहराय।
चाहे प्रान रहे या जाए
सीमा पर झंडा लहराय।।

हम सूरज से आख लड़ाते
हाथ मिलाएं शेरन से।
हाथी सा बल छाती में है
लड़ने आए हैं सुवरन से।।

गीदड़ भभकी अब ना देहो
बम बारूद ले कर आव।
तोहरे रक्त की नदी बहाऊ
मुण्डमाल माँ को पहनाव।।

माटी की सौगंध लेइ कर
रण में कूद पड़े है वीर।
आर पार की लडूं लड़ाई
दुश्मन छाती छेदूँ तीर।।

छिन्न-भिन्न कर काट-पाट कर
खाली कर दूँ पाकिस्तान।
बैरी न जन्मे काल अन्नंता
करहुं लड़ाई घमासान।।

जय हिंद....जय भारत.... !!

नश्ले-आज़ादी उगा लो

अपना घर, धर्म, दौलत, शोहरत सम्भालने वालो
खतरे में तिरंगा है, आज़ादी है, जागो और संभालो।
घर तो हिन्द-सर-ज़मीं है, महफ़ूज़ है जब तक यह
चैनो-अमन-शकुं की सांस ले रहे हो घरवालों।
सीमा पर तान सीना सबल-सजग सिपाही हैं
देश के भीतर छिपे दुश्मन को ढूंढ मार डालो।
वीरों ने लहू सींच धरा फसले-आजादी उगाई है
उनकी कुर्बानी याद कर, नश्ले-आज़ादी उगालो।
शत्रु देशों से व्यापार बन्द का शंखनाद करो
चीन-पाक की कोई वस्तु न छुएं कसम खालो।
फिर न सड़को पे झुका भारतीय हण्टरों से पिटे
आज हर दिल में, देश प्रेम बीज बो डालो ।
सब मिल करो जतन, लहराता रहे तिरंगा सदा
प्रदेश-रंग-जात-धर्म-भाषा के भेद धो डालो।
डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस, सी.ए से हटकर
हर घर में एक आज़ाद, बिस्मिल्ला, भगत पालो।
देश, मंत्री, पुलिस, सेना सौंप.. घोड़े बेच सो न रहो
"सब सिपाही" बन, आज़ादी खुद सम्भालो-पालो।

हिन्दूस्तान का बेटा पूछे

आज एक "बेटा" पूछे "मोदी" हिन्दुस्तान से
प्यार क्यों बढ़ा रहे हो कायर पकिस्तान से,
जिन्न- भुत बातों की भाषा नहीं समझते..
भूमि में पटक कर लात होनी चाहिए।।

जैसे बरसात आए, मेढ़क टर्राते हैं
अपनी गली में कुत्ते शेर बन जाते है
छल औ कपट भरे हत्यारों के सर में
बम औ बारूद की बारात होनी चाहिए।।

जंग अब टालो मत हिंदी जज्बातों से
मौका पाके आहत करेगा पाक घातों से.
धावा बोल कर के खतम करो दुश्मन
जवानों की दीवाली की रात होनी चाहिए।।

क्यों आतंकी, हमारे वीरों को भरमाते है !
सीमा के शहीदों की शहीदी भूल जाते हैं ?!
छूट दे दो एक बार सेना के जवानों को
पकिस्तान की जमीन लाल होनी चाहिए।।

कश्मीर से कन्या कुमारी हिन्द देश है
धर्म हैं अनेक पर मातृभूमि एक है,
हमारे अमन में जो अशांति फैलाए तो
दुश्मन का देश श्मशान, होनी चाहिए।।

एक वीर खोए दस मुंड काट लाएंगे
हमला करे वो हम, बम बरसाएंगे,
सेना के नियम बस सैनिकों को सौंप दो
कुत्ती पकिस्तान -कब्रिस्तान होनी चाहिए।।

बार- बार आतंक फैलाता हिन्दुस्तान में
एक तो पलटवार करें पकिस्तान में,
चुन-चुन लाहौर के आकाओं को मारेंगे
हत्यारों की खत्म जमात होनी चाहिए।।

बच्चे बूढ़े पथ्थरों से कूचते जवानो को
मंत्रालय कैंडल जलाने औ बयानों को,
सीमा की सुरक्षा में जो प्रहरी तैनात हों
शत्रु छाती छेदने की छूट होनी चाहिए।।

17 माओं की गोद फिर से सुनी हुई है
मांग हैं तैयार फिर सिंदूर पूंछवाने को !!
एक भी न ज़िंदा रहे खूनी पाकिस्तान में
हिन्दुस्तानी दिलों में तूफ़ान होनी चाहिए।।

मारकाट-गोस्त-लाश उसको पसंद है
जिनके जज्बातों में खून की ही गंध है,
तांडव जरुरी उसके आँगन की धरती
खूनियों का देश सुनसान होनी चाहिए।।

बम औ बारूद और गन और गोलों को
वीरों से लाल हुई धरती के बोलों को,
बदले की आग सीने में सहेजो वीर मेरे
देखते ही दुश्मन को लाश होनी चाहिए।।

दुश्मन भुनने की छूट दो जवानों को
जहां देखें गोली मारो नापाकों हैवानो को,
अब ईंट का जबाब चट्टानों से है देना जरुरी
आतंकी साँसों का अवसान होनी चाहिए।।

सहर आती है

रौशनी जब कभी सरकती है...तो रात आती हैं,
अंधेरी रात जब गुजरती है...तो सहर आती है।।

जहाँ के मेले में एक आदमी...कुछ भी तो नहीं,
जिंदगी जीने की ख्वाहिश में ही...गुज़र जाती है।।

तेरे आने की खबर जब आई..खुशबू भर आईं,
तुम्हारे होने के अहसासों से...ये बिखर जाती है।।

जुलूस-सेहरे का जुनून है कि...मशहूर होना है,
बड़ों से मिलने का सलीका जाने किधर जाती है।।

गरीब खेतों में पिसता होता...जवान सरहद में,
सत्ता जिसकी भी हो मौके पर...मुकर जाती है।।

जब सभी वतन की माटी सोचें...एक हो जाएं
टोपी-कुर्सी के बिना भी सड़कें..सँवर जाती हैं।।

निशाने आज हैं सियारों के..गाय-मन्दिर-मस्जिद,
आदमी बंटता है तो आदमियत...मर जाती है।।

अल्लाह, राम, ईसा, नानक की, ये धरा है पावन,
धर्म-संस्कारों से भरी जिंदगी, ठहर जाती है।

बैरी की कब्र खनन कर लें

आओ हम मिल के राष्ट्रध्वज का वन्दन कर लें
जो हुए खेत, शहीदों को हम नमन कर लें।।

जो लहू प्राण से शपथ के लिए जीते हैं
वतन के लिए मरते हैं, वतन के लिए जीते हैं
उनके जज्बे औ मुहब्बत को आंचमन कर लें।।

जिनके लहू से धरा लाल हो के गर्वित है
औ जिनके लाल हिदुस्तान को समर्पित हैं
जो शहीदों के लहू मांग में सजाए हैं

जिन बच्चों आज शहीद पिता पाए हैं
मा-पिता पत्नी-पुत्र भावों को मनन कर ले।।

मुल्क की जिनने अपनी जान दे, हिफ़ाजत की
धरा में बिखर गए, आन बचा भारत की
शपथ लें चालीस के बदले हजार मारेंगे
नापाक रावण के अहंकार को जारेंगे
माथे शहीदों के राख को चन्दन कर लें।।

अग्नि पृथ्वी ब्रम्होस विक्रमा सब खोले जाएं
आतंक की नाभि में अग्नि बाण छोड़े जाएं
इतने टुकड़े करें कि फिर न शत्रु उठ पाए
पाक की भूमि में कोई न जिंदा बच पाए...
अभी ही कायरों के कब्र का खनन कर लें...

कितने जयचंद....

रोज सैकड़ों सपूत गंवाने से अच्छा है
एक जाबांज़ सरफिरा हो तो अच्छा है
एक बम या मिसाइल दाग कर के घर आए
पाकिस्तान-कब्रिस्तान कर के घर आए
चलो बैरी के खात्मे का एक जशन कर लें।।
जो हुए खेत-शहीदों को हम नमन कर लें।।

रंग दो धरती

रंगों से खेलें आओ वीरों आया वीरों का त्यौहार
रंग दो धरती सराबोर औ मन की पूरी कर लो यार,
देशद्रोहियों के सर काटो, काला धन वापस ले लो
हिन्द के माथे पर कलंक का दाग नहीं होना इस बार।।

तभी तिरंगा लहराएगा भारतवासी हर दिल में
लोकपाल सरल होगा औ जनहित की बातें हो बिल में,
सबल रहेगा देश हमारा, लूट रहे न भ्रष्टाचार
टोपी कुरता गमछा फेंको, तज दो मन का काला यार।।
रंगों से खेलो आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दो धरती सरबोर औ मन की पूरी कर लो यार।।

आसमान में बिजुरी चमके, बदरा ज्यों करते बौछार
तुम गरजो इस देश धरा औ ध्वस्त करो सब भ्रष्टाचार,
असहायों को मिले मदद बस ऐसे नियम बनाओ यार
शीर्ष बसे अजगरों के सपने ना होने पाएं साकार।।
रंगो से खेलो आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दो धरती सराबोर औ मन की पूरी करलो यार।।

आतंकी हमले बम फूटें लूट डकैती बीच बाजार
पाकिस्तानी सुवर बिफरे करते बारूदी बौछार
तुम हरदम कस कमर रहो दुश्मन की छाती छेदो यार
हिन्द की ताकत देखे शत्रु फिर न आए बारम्बार।।

रंगों से खेलो आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दो धरती सराबोर औ मन की पूरी कर लो यार।।

अब की रंग न खेलूं होली, खून की होली दुश्मन की पाक
के नापाक इरादे, ध्वस्त करो उसके मन की,
कश्मीर भारत का लहू है बैरी मत ललचाए रे
सरल ह्रदय को नाजुक समझे उसके माथे गोली मार।।
रंगों से खेलें आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दो धरती सराबोर औ मन की पूरी कर लो यार।।

कटते हरित वनो के कारन जीना होगा मुश्किल रे
फैक्ट्रियों के धुओं का सांसो में मिलना मुश्किल रे,
रोको जंगल की क्षति बोओ दुनिया में हरियाली तुम
जीवन को रखने के लिए प्राण वायु मत खोओ यार।।
रंगों से खेलें आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दें धरती सराबोर औ मन की पूरी कर लो यार।।

आपस में हम क्यों लड़ते हैं ताकत बचा बचा रक्खो
जब हो जरुरत देश के खातिर तब ताकत को खर्चो,
आतंकी औ देश-द्रोही से लड़ने शक्ति लगाओ यार
अन्यायी लोभी दंभी को हुंकारों औ दो ललकार।।
रंगों से खेले आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दो धरती सराबोर औ मन की पूरी कर लो यार।।

बलात्कारी औ हत्यारों को चौराहों पर दहन करो
नर पिशाच हैवानों को धरती पर मत सहन करो,
मानवता को लज्जित करते हैं ये राक्षस बारम्बार
इन्सानों की राह धरा में विषधर नहीं रहेंगे यार।
रंगो से खेलें आओ वीरों आया होली का त्यौहार
रंग दो भारत प्रेम रंग में मन की पूरी कर यार।।

मानवता के लिए जिओ देश धरा के लिए जिओ
हर तन को रोटी कपड़ा औ एक मकां की है दरकार,
लेकर जाना नहीं किसे न उम्र बढ़ा सकते है यार
धन समेटना छोड़ समेटो जीवन होली खेलो यार।
जागो जागो भारतवासी आया वीरों का त्यौहार
रंग दो धरती सराबोर औ मन की पूरी कर लो यार।।

अपने वतन की आन पर..

अपने वतन की आन पर कुर्बा हो जाना चाहता हूँ,
त्याग सब कुछ मातृ भू की शां हो जाना चाहता हूँ।
जिस कोख में पला-जना-आया धरा पर सांस ले,
कोख औ धरा के खातिर सब लुटाना चाहता हूँ।।
प्रथम पूजूँ माँ-पिता और.... मातृ भूमि की धरा,
नमन वन्दन फिर... सपूतों का मनाना चाहता हूँ।
सैकड़ों सालों से जब हैवानियत थी राज करती,
रोते-पिसते-हिन्द-जन... यादें दिलाना चाहता हूँ।।
जब धरा पुत्रों ने हंसकर, फांसी का फंदा स्वीकारा,
माँ भारती पर बिछ गए, वो दृश्य दिखाना चाहता हूँ।
भगत-शेखर-गुरु-सुभाष, बिस्मिल्ला-और तिलक के,
सुखदेव-बल्लभ-लक्ष्मी की मैं राह जाना चाहता हूँ।।
राणा-शिवा-तात्या से वीरों की धरा पर जन्मा पाया,
बापू के अनशन का चरखा मैं चलाना चाहता हूँ।
आज फिर आज़ाद धरती..पर नजर शत्रु है की,
शत्रुओं की मुण्डमाला माँ को पहनाना चाहता हूँ।।
जो नज़र मेरे तिरंगे पर गड़ेगी ....जब कभी भी,
आँखें निकाल चील-कौवों को खिलाना चाहता हूँ।
सरहदों की शान्ति छीने -बैर बोये-खून बहाये,
बैरी सारे मार, हिमगिर ध्वज..फहराना चाहता हूँ।।

फिर हुंकारा है

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है।।

वन्दे मातरम्-वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है ।।

कोई शत्रु लालच में आकर, जब भी घात लगाए

नापाक इरादे ले करके, छल कवच पहन के आए,

शत्रु कपट को, सीमा पर, वीरों ने मारा है ...

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है।।

वन्दे मातरम्-वन्दे मातरम

फिर हुंकारा है।।--।।

दो सलामी तिरंगे को, भारत माँ की शान है

ध्वज उठाए रखना तुम, जब तक लहू है, प्रान है

वतन-अमन हो, सत्य- मेव-जयते का नारा है...

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम् -वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है।।

हिन्द के बेटों आओ बढ़ाऐं, जननी का सम्मान हरा-

केशरिया-और श्वेत का, हम सब रख लें मान

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, भाईचारा है...

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम्- वन्दे मातरम

फिर हुंकारा है।।

कायर पकिस्तान को देखो, बारूद हमें दिखाता है

नहीं मालूम की शेर-बारूदी, जनती.. भारत माता है

कश्मीर से बार-बार, तुझको दुत्कारा है...

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम्- वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है।।

शैतानो से डरते है न हैवानों से डरते हम

न कारगिल- कश्मीर, खूनी तूफ़ानों से डरते हम

शेर दिल जाबांज है हम, बुजदिल नहीं मारा है...

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम्- वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है।।

लालसा बिलकुल नहीं कि, निकले सजी बारात

छाती में गोली, अर्थी में कफ़न तिरंगा साथ,

पिद्दी पाक और चीन को दूँ, जबाब करारा है..

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम- वन्दे मातरम

फिर हुंकारा है।।

लश्कर के पिल्लै भौंके है, हिन्दू आग लगा देंगे

मुर्दा कभी जला न सके वो, ज़िंदा हमें जला देंगे

कायर कुत्तों सामने आओ, वीरों ने ललकारा है..

भारत देश हमारा है

हमको जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम्- वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है।।

हिंदुस्तान है हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई का घर

राम, अल्लास ईशु, गुरु हम सबको पूजें बराबर

कोई-धर्म के नाम पे बांटे, हमें नहीं गंवारा है..

भारत देश हमारा है

तिरंगा जान से प्यारा है,

वन्दे मातरम्- वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है।।

जय जननी जय भारत माता.....

जन गण मन अधिनायक जय हे....

वीरों का नारा है

वन्दे मातरम्- वन्दे मातरम्

फिर हुंकारा है।।

दुल्हन शहीद की

सेज पर बैठी थी दुल्हन और बुलावा आ गया,
आक्रमण हुआ प्रिये आता हूँ कह चला गया ।।

बैरी की तोपों, गनो, टैंकों, से वो लड़ता हुआ,
वीरगति पाया सिपाही, आंसमा से जा मिला।।

शहीद की दुल्हन निहारे बाट पिया की आज भी,
वीर पर लौटा नहीं सरहद के आँचल बिछ गया।।

वो तिरंगे, देश अमनो-चैन के खातिर गया,
ना भी, लौटूं मांग मत तुम पोंछना कह के गया ।।

वतन के जाबांजों की बीबी न बेबा होती है,
मैं मरूँगा कभी नहीं तेरे उदर में आऊंगा।।

जन्म दे, बेटा मेरा...भेज जो पिता की राह पर,
मेरे अधूरे काम की सौगन्ध....देकर के भेजना।।

देश के माथे के कुमकुम और तिलक सिन्दूर जो,
शहीद की दुल्हन रहे सौभागी सी दुल्हन सदा।।

न्यू ईयर पर.... एक हिन्द वीर गीत

जागो हिन्द सपूतों, दुनिया हिन्द रीत से जोड़ो,
अंग्रेजों के रीत-रस्म से बिलकुल नाता तोड़ो।
अंग्रेजों के नए साल तुम फिर क्यूँ वापस आए,
भारत छोड़ी बड़ी मुश्किल से 69 जूते खाए ।।

हिन्दपुत्रों को नहीं सहन किबार-बार तुम आओ,
ब्यापारी बन धीरे-धीरे सर में चढ़ते जाओ।
राम, रहीम, नानक की धरती की रीती है पावन,
हमें हमारी मातृभूमि कि रस्में हैं मन भावन।।

हिन्द देश में चैत्र एक को नया वर्ष आता है,
हिन्दुस्तानी धर्म-कर्म से जिसे ह्रदय पाता है।
कई सैकड़ों साल जिन्होंने अत्याचार किए थे,
सरल ह्रदय औ धर्म दिलों को क्षत-विक्षत किए थे।।

दमन-फूट औ बलात्कार, जिनका कोई धर्म नहीं था,
असहायों-पीड़ितों को लूटते कोई शर्म नहीं था।
बलिदानों औ रक्त सींच कर धरती मुक्त हुई थी,
कितनों फांसी चढ़े लाल तब 'माँ' आज़ाद हुई थी।।

न्यू ईयर है अन्याई अत्याचारी गोरों का,
एक जनवरी नया साल है बस साले चोरों का।
अपने सुख-दुःख, रीत-रस्म कभी नहीं भुलाओ,
अंग्रेजी फेंको, भारत की परम्परा मनवाओ।।

भूल न जाओ तात्या टोपे लक्ष्मी बाई रानी,
औ न भूलो राजगुरु, सुख, भगत सिंह बलिदानी।
मत भूलो राणाप्रताप औ वीर शिवा हुंकार,
बिस्मिल्ला, आज़ाद, बोस, बापू, नेहरु, सरदार।।

अंग्रेजों की कोई रीत भी नहीं मनानी हमको,
हिन्द धरा पर पुनीत-पावन पर्व मिले है सबको।
हिन्द शत्रु की सभी कुरश में हमें तोड़ना होगा,
अपनी जुबां, पावन पर्वों से विश्व जोड़ना होगा।।

हिंदी हिंदुस्तान पूर्ण है, भगवत-कुरान है प्यारे,
संविधान है विधि-विधान औहज-तीरथ है न्यारे।।
शपथ दिवस है आज की भू भाषा का मान बढ़ाए,
अपने माता-पिता-पूर्वजों का अभिमान बढ़ाए।।
अंग्रेजी-न्यू ईयर-वेलेंटाइन लुटेरों को हो मुबारक,
हिन्दुस्तानी ...भाईचारा ...हिंदी हमें मुबारक।।

शेर दिल चट्टान हैं हम

माँ भारती का शेर हूँ, मैं तिरँगा फहराऊंगा,
शत्रु आया सामाने तो, फाड़ कर खा जाऊंगा।।
मैं ग़ज़ल हूँ गीत हूँ कविता वतन-जाबांज़ हूँ,
न कि हुश्न-ओ-इश्क़ के किस्से तुम्हे सुनाऊंगा।।
सियासी चालों ने दमखम, देश की जो तोड़ी है,
आदमी के दिल-ज़ेहन को मजहबों पे मोड़ी है।।
दोस्तों तैयार हो सब, हर कदम जेहाद को
शत्रु कांपे देखकर के, शेरदिल फौलाद को।।
पार्टियों झंडों से उठकर, तिरँगा थामे रखो,
प्रांत-जाती और भाषा की न तुम बातें रखो।।
आंधी-तूफां-बाढ़ के विप्लव को रोको साथियों,
भूख बीमारी के आंसू बढ़ के पोंछो साथियों।।
हम जियें सुख चैन से घर में अमन और हो खुशी,
वीर सरहद पर अड़े है इसलिए वतन हँसी।।
सीमा पे हैं वो तने हम हिफाज़त घर की करें,
दुश्मनों से वो लड़ें, हम एकता कायम रखें।।
हिंदुस्तान दिल हमारा और तिरँगा जान हैं,
मुश्किलों में भी अटल, हम शेर दिल चट्टान हैं।।

ए वतन....जवानी दे दूंगा

तुझको मैं अपनी सारी जवानी दे दूंगा,
ए वतन मैं अपनी जिंदगानी दे दूंगा।।

सरहद पर रोके खतरों को अड़ा रहूँगा,
अवाम को दिन व शाम सुहानी दे दूंगा।।

खून का एक भी कतरा जब तक है नस में,
तिरँगा लहराता रहे कहानी दे दूंगा।।

हरेक घर मे एक बेटा भारती माँ का हो जाए,
प्रेम से लथ-पथ धरा महान पुरानी दे दूंगा।।

सड़क-अस्पताल-न्यायालय में इंसानियत बसे,
गगन छूती खुशियों की जान रवानी दे दूंगा।।

लाल जब भी बिछ जाऊं हो लाल छाती पर गोली खा,
एक के बदले सौ जन्में वो तर्जुमानी दे दूंगा।।

सरहद के घावों को

कोई जुगनू अँधेरी रातों, को रसता दिखा देगा,
गलियाँ भूख से बेदम, निवाले वो खुदा देगा।।

हिन्दुस्तान सारा नोटों के फरेब में शामिल,
सरहद के घावों को तो बस सैनिक दवा देगा।।

खिलाफत की हवा में "सदर" औ "खिलाफ" भी भुला,
कितने फर्ज़ भूले हैं जो कल सपने मिटा देगा।।

वतन के नुमाइंदों, छींटाकश में तुम रहो मशगूल,
अम्नो-चमन का एक फूल कोई बच्चा खिला देगा।।

तकरीर औ वादों से रौशन ..हुई नहीं सड़कें,
बुझाना मत जो कोई और "एक दीपक जला देगा।।

जहां भर रौनकें औ दौलतों, शेखी बघारो तुम,
बिलखते गांवों को, फ़क़ीर कोई तो दुवा देगा।।

गुलाब मुस्कुराए दिल से खुश होंठों पे दुनिया के,
दिल बूढ़ों का बच्चों को सदा माँ सी "सदा" देगा।।

रुलाएं शहर की साँसों को जब लालच की टोपियां,
सुबह -दिल आदमी जागेगा गुलशन मुस्कुरा देगा।।

दोहे

सीमा पर सैनिक डटे, शत्रु से लड़ते रोज,
संसद में मंत्री डटे, करते निशदिन भोज।।

छाती छप्पन इंच की, कद है पूरे सात,
मुखिया फूंके रात-दिन, अच्छे दिन की बात।।

वोटों की खातिर हुए, बिल्कुल नँग-धड़ंग,
देशहित को भूल कर, छेड़े घर मे जंग।।

पप्पू खलनायक हुआ, हीरो मोदी होय,
नोट वोट का खेल है, देश की नाव डुबोय।।

देशभक्ति-जनसेवा का, पीट रहे हैं ढोल,
कुर्सी-वर्दी में भेड़िये, छुपे भेड़ की खोल।।

न्याय नहीं सम्भव उसे, जाके पास न माल,
पेशी में जूते घिसे, हो गयो जी को काल।।

गैस मोबाइल दारू और चावल बांटे देव,
भैंस वही ले जाएगा, सच बोलेगा टेंव...!!

सिपाही सदर कीजिये

न ही लम्बी चद्दर कीजिये
न ही ख्वाहिश जबर कीजिये।।
चार दिन की हसीं जिंदगी
सबर से गुज़र कीजिये।।

धन दौलत ही सब कुछ नहीं
प्यार में कुछ उमर कीजिये।।
जिस माटी में पैदा हुए
देश रक्षा..डगर कीजिये।।

आज हो दूब, कल पेड़ हो
बढ़ते बढ़ते लहर कीजिये।।
घूरे के दिन पलटते हैं जी
कुछ तो सबर कीजिये।।

सरहद पर अड़े पुत्र हैं
टोपियों को खबर कीजिये।।
चीन पाकी के मुंह न लगें
टैंकों से बस कहर कीजिये।।

देश बेचे जो काफिर कोई
खत्म उसकी उमर कीजिये।।
भाजपा-कांग्रेस अब ...नहीं
सिपाही...सदर कीजिये।।

अहं का दीया बुझाओ यार

हिंदुस्तानी भाई सारे, प्रेम के दीप जलाओ यार,
तिरंगा हो धर्म हमारा, मजहब नही सिखाओ यार।।
भूख-गरीबी और बीमारी किसी जीव को न आए,
घूस-फूस और लालच के पेड़ों को आग लगाओ यार।।
फूंक रहे हो झोपड़ बस्ती अपनी तेज मशालों से,
हिम्मत हो तो फोड़ फटाके, शत्रु-दीया बुझाओ यार।।
जलते दीपक सड़कों के दिल, आग लगाते जाते हैं,
रौशन करने अंधेरो को, प्रभु का दिया जलाओ यार।।
जितने दीपक आज हो रौशन, शुक्र मनाओ उस प्रभु का,
रात गए दम तोड़ोगे, सबको उजियार दिखाओ यार।।
अमन-वतन के कितने दीपक जल, माटी में समा गए,
उनके घर के चेहरों में, खुशियां बन के छप जाओ यार।।
पेड़ लगाओ, बांटों कम्बल-कपड़ा-रुपया-और भोजन,
दिल से न कि फेश बुक में, फोटो तुम खिंचवाओ यार।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सीमा पर जलते दीपक,
घुस कर कायर पाकिस्ता के अहं का दीया बुझाओ यार।।

सर पे ताज़ तो कांधे पे

सर पे तो ताज और, काँधे पे दुशाला होगा,
कितनो ने, जाने कैसे खुद को सम्भाला होगा।।
अब तो योगी, महात्मा, हिन्द सदर बन ही गये,
भ्रष्ट मरेगा और सत्य उजाला होगा।।
कोषों में ठूंस भरे,...........धन सफेद चूहों ने,
जिनकी करतूतें काली, मुह भी तो काला होगा।।
एक बार सेना और गुरुओं को सौंप दो शासन,
शकुनि, दुर्योधन औ जयचंदों को निकाला होगा।।
अफसर, मंत्री, बाबा, नेताओं का बस जलवा है,
मुखिया कोई भी हो, पब्लिक के मुँह ताला होगा।।
सीमा पे जवान, देश-धर्म....लिखते कलमकार,
अवाम समझे तो, अच्छा दिन आने वाला होगा।।
सरहद को सेना, राजनेताओं पे न छोड़ो यारों,
तभी हर जन को सुख, हर मुँह में निवाला होगा।।
अपने बीबी बच्चे, घर-नौकरी-ब्यापार में हम,
लगे हैं राष्ट्र धर्म भूल, हवाला और दीवाला होगा।।
रंग और छाप की जब तक चलेगी राजनीति,
फकीर नँगे सर-पाँव, गांव-पाँव में छाला होगा।।
हिन्द के पुत्र है हम, हिंद के प्रहरी भी हैं हम,
रहेंगे "हम" तो तिरंगा, न झुकने वाला होगा।।

दीवार ढहाया जाए...

चलो रोते हुए बच्चों को ....हंसाया जाए,
किसी भूखे को अपने हक़ का खिलाया जाए।।
खून, इन्सान, जिंदगी है सच कि..एक सभी,
चलो मज़हब की दीवारों को गिराया जाए।।

रोज बनते है नियम कायदे..फायदे ही नहीं,
सभी के हक़ में, वो...कानून बनाया जाए।।
गरीब बाप की......बेटी न ब्याही जाती हो,
मिला के-मिल के सभी...ब्याह कराया जाए।।

कोई बच्चा न सरपरस्ती से महरूम रहे,
गोद लेकर उसे.....भरपूर पढाया जाए।।
कोई आँचल न रहे खाली बिना किलकारी,
अनाथ बच्चा ले ....परिवार बनाया जाए।।

काट के पेड़-सूखा ताल-महल और फैक्ट्री,
ज़ीस्त के जरियों को अब यूं न लुटाया जाए।।
जाती और रंग-भेद-भाव जगाते हों सदर,
उन्हें बदल के "जन का दम" भी दिखाया जाए।।

मुल्क में घूस खोरी का चलन है फैल गया,
चलो अब पेट और ....भूख घटाया जाए।।
न तो बढ़ेगी उम्र और न .....मौत टलनी है,
"जमाखोरी औ लूट ब्यर्थ"...बताया जाए।।

आदमी पेशियों में फूंक रहा तन मन धन,
चलो एक बार ...सुलह पाठ पढ़ाया जाए।।
गर ए इन्सान अपने फ़र्ज़ को है भूल गया,
जीना बेकार है फिर... राह सुझाया जाए।।

बैर, लालच, दगा, फरेब में दिन क्यों खोवो,
शहर-बाज़ार, ये स्वीकार ....कराया जाए।।
वीर सरहद पे डटे ...देश बचाने में जुटे,
चलो सब उनके साथ..पाक उड़ाया जाए।।
न तो मन्दिर की जरूरत है न ही मस्ज़िद की,
रची है दुनिया "उसे"...दिल मे बसाया जाए।।

नापाक...पाक

ये हिन्दुस्तानी दिल है जो समुन्दर से भी बड़ा है,
यहाँ मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा व् चर्च खड़ा है।
कोमल ह्रदय को नाजुक न समझ ऐ पाक,
तेरे नापाक इरादों के सामने हिंदुस्तानी शेर अड़ा है ।।

पाक का हर्रामी पण सदा मशहूर है,
सुवर है की मैला खाने को मजबूर है।
आदतों से बाज आवो तालिबानी पाकिस्तानी,
हिंदुस्तानी लात घूंसे बड़े मशहूर हैं।।

कश्मीर मांगते हो घुसे चले आते हो,
नाजुक प्रदेश में आतंक मचाते हो।
आके देखो कभी छत्तीसगढ़ परदेश में,
कुचले जावोगे चाहे रहो किसी भेष में।।

आतंक मचाओ चाहे बारूद उडाओ रे,
दिल से नापाक ऐ के 56 चलाओ रे।
जिस दिन हिंदुस्तान जबाब को आएगा,
पाकिस्तान नक्से में जगह नहीं पायेगा।

बाप कौन माँ कौन जिसको पता नहीं,
ऐसे-ऐसे कुत्ते तो जिहादी बन जाते हो।
इन्शानो की परिभाषा में जो नहीं आते हो
पशु आचरण अपनी पीढ़ी को सिखाते हो।।

कायरता दिखा के तुम मुंह जो छिपाते हो,
मंदिरों के रास्तों में बारूद बिछाते हो।
संसद भवन में गोलीबारी बम बारी,
पीठ पीछे सदा तुम खंजर चलाते हो।।

दम हो तो आओ मिलो युद्ध के मैदान में,
दो दो हाथ हो जाये हिन्द पकिस्तान में।
हाथ लात घूंसा चाहे जिसमे रजामंद है,
चुन लो तुम्ही की मौत कैसी पसंद है।।

काला काला चश्मा रब्बानी को गुरुर है,
पाक गृहमंत्री चढ़ा नापाक सुरूर है।
लबों पे सलाम दिल कसाई का काम है,
कितने सिंकाये पकिस्तानी तन्दूर है।।

हेकड़ी को छोड़ो ओ मुहब्बत बढ़ा के देख,
इंडियन शत्रु को भी गले से लगाते हैं।
एक बार दो बार मुँह से कोशिश फिर,
तीसरी बार में हम खडग उठाते हैं।।

पहाड़ के निचे जब ऊंट नहीं आता है,
दुनिया ऊँची है कभी जान नहीं पाता है।
फौलादी सीने में तोप दाग के तो देखो तुम,
पाओगे तुम्हारा तोप खुद फट जाता है।।

अभी भी समय है आदतों से बाज आओ,
कसाब की तरह लटक मारे जावोगे।
भारत की तरफ टेढ़ी नजर छोड़ दो,
वर्ना समूचे पाकिस्तान को डुबाओगे ।।

सूअरों सा गूं खाना छोड़ो पाकिस्तान तुम,
कायरों सा वार करना छोडो पाकिस्तान तुम,
माँ भारती के "लाल" शेर जब "लाल" हो जाएँ,
बिछे होगे धरती में "लाल" पाकिस्तान तुम ।।

गूँजे कहीं पर शंख, कही पे अजाँ हैं,
बाइबिल, ग्रन्थ, कुरान औ गीता का ज्ञान हैं,
दुनिया में कहीं और ये मंजर नसीब नही,
ओ सुवर की नापाक औलाद ये मेरा हिन्दुस्तान हैं।

हिन्द-शेर आजाद करो

सिंह गर्जनाभाषण सुन जनता ने सिर ताज दिया,
हाल देश का "आंसू-भीगा" क्या कुछ तूने नया किया।
छप्पन इंची छाती वालों, खुद बन्दूक उठाओ तुम,
शेर गर्जना करने वालो, बैरी मार दिखाओ तुम।।

कश्मीर-बस्तर घाटी जाके जन गण मन तुम गाओ,
सींची लहू ये हिन्द धरा से, तुम राक्षस खत्म कराओ।
दुश्मन मारे, देश उबारें, सेना को अधिकार दो,
खुली छूट, बारूद औ गोली "देखते ही मार दो"।

वीर सिपाही जूते खाते, पत्थर से मारे जाते,
तुम कारण हो, देशध्वजा सड़कों पर जारे जाते।
शर्मसार है देश की जनता, नियम और कानून से,
सड़कों पर उतरेगी कभी भी राष्ट्र-प्रेम "जूनून" से।।

जल्द करो निती बदलो "ठोस कदम" न उठाओगे,
सैन्य बल खाली हो जाए, सिर पीट पछताओगे।
बुजदिल नीति रही अगर तो सैनिक कौन बनेगा,
जाबांजों से खाली रणभूमि, झंडा झुक रोएगा।।

देश रक्षा करने वालों का सबसे ओहदा उच्च करो,
मंत्री नेता अफसरों को उसके बाद ही गिना करो।।
बर्दाश्त नही है अब अवाम को, वीरों का परिहास,
सुविधा-सुरक्षा-हक उसको हो, करे शत्रु का नाश।।

गीत नहीं ये चेतावनी है, राजनीति को छोड़ चलो,
अमन, अवाम, जवानों खातिर, सारे बन्धन तोड़ चलो।
वो जिंदा हों, अडिग खड़े हों, है महफूज तभी जनता,
सर्वप्रथम उनको सबल-खुश रखने करलो जी चिंता।।

अभी भी समय है खुला छोड़ दो तुम भारत के शेरों को,
जड़ से मिटा दें इस धरा से, आतंकी और लूटेरों को।
पाक उड़ाने, नक्सल मिटाने, हिन्द शेर आजाद करो,
या देश के जांबाजों को सौंप के सत्ता भाग फ़िरो।

जड़ें हिला रहा हूँ

शत्रु के षड़यंत्रों को, विफल करा रहा हूँ,
माँ भारती के घावों में, मरहम लगा रहा हूँ।।
ज्वालामुखी के मुँह में खड़ा तुम्हारा मुखिया,
भ्रष्टाचार को जलाने, खुद को जला रहा हूँ।।
आजकल दिलों में आंधी आये तूफा कितने,
भाषणों से मैं धधकती, अग्नि बुझा रहा हूँ।।
नोटों की मिर्गीयां जो, दुनिया को हो गई थी,
अरबों-खरब का जूता, उनको सुंघा रहा हूँ।।
पिता था-पीता था, जो पीता जा रहा था,
उन फ़ालतू लोगों को लाइन, लगा रहा हूँ।।
मेरे देश की जड़ों को नकली, कुतर रहे थे,
मैं दुश्मनो की असली, जड़ें हिला रहा हूँ।।
न लूट न डकैती, न अमीरी न गरीबी हो,
खुशहाल एक देश के, सपने सजा रहा हूँ।।
माँ भारती के आँगन पले-बढ़े औ पनपे,
कपूत कितने हैं यहां ...पता लगा रहा हूँ।।
तुम साथ दो 50 दिन मैं अपनी साँसे सौंपा,
आतंक अब न पनपे, जहरीले भगा रहा हूँ।।
वीरांगना हुई माँ ...सपूत भी एक खोया,
देशहित में, मैं भी जान दांव पर लगा रहा हूँ।।

पी.एम. ने कर दिया पी.एम.

(एक सर्जिकल स्टडी)

देश में नया इतिहास बनाया, नये फैसले से,
भाषा औ अर्थ शास्त्र बचाया नए फैसले ने।
दोगलों का भूगोल बदल दिया, नए फैसले ने,
शत्रु का गणित बिगाड़ दिया, नए फैसले ने।।

रोज रोज पथराव-आगजनी आज खो गए,
आतंकी के "हरे-लाल" रोके, नए फैसले ने।
नही मिले जब नोट...,बन्द हुए विस्फोट,
खुनी वादी में शान्ति लाया, नए फैसले ने।।

कर चोरी..जमाखोरी..सीनाज़ोरी..सब नंगा,
"देश के दुश्मन" औ "देश के" दुश्मन..भिखमंगा।
देश निगलने अजगरों के काले सपनों का,
"पी.एम." ने "पी.एम." कर दिया..नए फैसलों से।।

जो लक्ष्मी है भोजन-वस्त्र-छत है जीवन है,
नदी नालों या अग्नि के क्यों कर करो हवाले।
अधिक जमा हों देश को दे दो "गंगा नहाओ,
बन्द घोंटाले और हवाले-नए फैसलों में ।।

शत्रु धर के बैठ गया है अपने हाथ पर हाथ,
दंगा करने वालों की छोड़ गई किस्मत है साथ।

ऐ के 56/नोट के विंडल वरना देते हर हाथ,
जहरीले मंसूबों में फिर गया पानी, नए फैसलों से।।

मुल्ला-पण्डित-नेता-मंत्री हो जाते सब नकली,
गद्दारों की गोट बैठती-वोट-नोट सब नकली।
पर होते जो हम खाते खोट-चोट-विस्फोट असली,
एक "वार" में, एक बार में सारे मारे-नए फैसले ने।।

फ़ाक़ाक़शी में डूबी होती गांव की गलियां,
500/1000 के वार बहाती खुनी नदिया।
हिन्दू-मुस्लिम दंगो का न्योता-दुश्मन देता,
आस्तीनों में छुपे नागों को मारा, नए फैसले ने।।

एक बार-एक वार, सारे शिकारी हुए शिकार,
पाक के नापाक इरादों को मिली हार पर हार।
याद रहेगी स्सालों को सालों तक थप्पड़ जोरदार,
सच को जिताया-फरेब हराया-नए फैसले ने ।।

जातिवाद-पार्टीवाद-द्वेष-विरोध से उबरो,
देशहित-जनहित ने सोंचो सब मन से सुधरो।
जन सुखी-सुरक्षित है, मुखिया हो जब असली,
सहस्त्रो संकट के खतरों को मारा-नए फैसले ने।।

कंगन

कंगन पहन बैठे हम, और वो छातियाँ फुलाये,
अहिंसा के ढोल पीटें-हम, वो तलवार हिलाए,
बारूद दिल मे मेरे...,एक बार खुला छोड़ो,
आतंकी की जमी को, कब्रिस्तान बनाएं।।

सीमा के पार जब भी, शैतान मुस्कराए,
भारत हृदय सरल को, डरपोक समझ जाए,
माटी तिलक लगा लें, सिर पे कफ़न चढा लें,
नापाक नियतों को बढ़कर धूलि चटायें ।।

कंगन जभी खनकते माँ की याद आ जाए,
तरह तरह के पकवान उन हाथों ने बनाए,
वो हाथ तो सर पर है, पर साथ नहीं है वो,
मंदिर की घंटियों सी, वो खनक याद आए।।

कंगना चूड़ी बाली, और ओंठो की लाली,
बल खा के, इठलाके चाल चली मतवाली,
कनखियों से जब भी, हिरनी सी नज़र देखे,
माँ कसम उछलकर, हल्क में दिल आ जाए।।

माथे पे तेरे बिंदिया, चमके सदा सदा ही,
सिन्दूर मांग चमके, हाथों में खनके कंगन,
बहना तेरे जीवन में, जगमग सी रोशनी हो,
चंदा- सूरज की जोड़ी ने, कभी कोई ग्रहण न आए।

तख़्त-ताज हमने सौंपा था जिस सदर को,
विश्वास तोड़कर जो, अपनी हवश बुझाए,
ख्वाबो-अवाम और जो जनता के हक़ को लूटें,
हाथों में डाल कंगन, कुर्सी से उन्हें हटाएँ ।।

लंका जलानी है

जन्म- मृत्यु-प्रेम...जीवन एक... कहानी है,
जो उसकी जिंदगानी है वो मेरी जिंदगानी है।।
मूरत-चित्र... भाषा-रंग...देश-भेष ...हम देखे,
न देखें सबका मालिक-एक-सबकी जिंदगानी है।।

मोदी लाख कोशिश कर लो चाहे खत्म करने की,
कालाधन- जमाखोरी हमारी खानदानी है ।।
जमीं से आसमा, बादल-सितारे-चाँद-सूरज सब,
रहेंगे सब, जाएगा आदमी..इतनी कहानी है ।।

सीमा पर सिपाही जान देते वतन के खातिर,
शहर में ठाठ से घूमे दरोगा.....घूस खानी है ।।
जो था विश्वास कोषों में, न्याय पालिका में भी
हो गया पानी ख़ालिश...दूध ..पानी-पानी है ।।

देश-चूसें खटमलो को, हक़ दिया हमने,
जनता भाड़ में जाए..उन्हें महलें बनानी है ।।
तिरंगा फहरेगा फिर चौक चौराहों, डरा-डरा,
जो बेचें अमनो-आज़ादी.! उन्ही ने ही फहरानी है ।।

कसम माँ भारती की, बारूदी-मशाल मिल जाए,
रावण-कंस-औ जयचंदों की ...लंका जलानी है।।

एक कविता राष्ट्रीय एकता के लिए

फिर खतरे में आज़ादी है,
देश की बाहें सबल करो,
बाकी है जंजीरें गुलामी,
मन की एकता प्रबल करो ।।

मानवता के अधिकारों औ,
देश हितों की रक्षा को,
लालच के भूखे असुरों औ,
विध्वंसी प्रवृत्तियों को ।।

वन्दे मातरम् फिर हुंकारें,
फिर इनका वध सकल करो,
फिर खतरे में आज़ादी है,
तन को मन को प्रबल करो ।।

हिन्द धरा में जितने जन्मे,
पले, हिन्द के बेटे हो।
क्रूस पहने या धोती, दाढ़ी,
चाहे पगड़ी लपेटे हो ।।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
सब मिल हिन्दुस्तान हो।
हिन्द देश के सारे बेटे,
माँ भारती की शान हो।।

माँ भारती कोफिर कोई शत्रु,
कतई न हानि पहुंचाए।
भगत, राजगुरु, बिस्मिल्ला,
लाल न प्राण गवाएं।।

सोचो पीड़ा, ब्यथा व् शोषण,
क्यों फैले घर आँगन में,
है भूख कहीं, असीम लालसा,
क्यों तेरे मेरे मन में !!

आँचल में माँ के बच्चे सब,
खुश रहें, कुछ पहल करो।
फिर खतरे में आज़ादी है,
फिर बाँहों को सबल करो ।।

रक्त की प्यासी तलवारें,
जो मन के हृदय को बाँटती हैं।
धन सत्ता की दीवारें, जो,
अमन चैन को काटती है।

मुक्त करें हम मै और तू को,
स्वारथ की जंजीरों से।
मुक्त करें आकाश भूमि को,
घेरों और लकीरों से।

मन प्राण लहू से एक होएं, औ
राष्ट्र एकता प्रबल करें,
फिर खतरे में आज़ादी है,
देश की बाहें सबल करो ।।

जय हिन्द ।। जय भारती ।।

संविधान को जकड़े भक्षक

हिंदी-हिन्दुस्तान औ संविधान
आरंभ से लेता आया..अनगिनत बलिदान !
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान
अंग्रेजी बेड़ियां काटी,
वो थे हिंदुस्तानी धर्म पूत
माँ की छाती पर बिछ गए कितने
माँ भारती के सपूत।
हिंदी-हिन्दुस्तान औ संविधान
रोज कुचलते हिन्द मान !
अपने स्वारथ में, तोड़-मोड़ कर
शीर्ष में बैठे अजगर
बदले पूर्ण विधान !!
यार बदलती "रंडी" जैसा
बदले जिनका ईमान !?!?
जानहित-राष्ट्रहित के
मद्देनजर हर मान बनाते,
सुखी रहे हर जात-धर्म-जन
कुछ ऐसा संविधान बनाते,,
वर्तमान में बिगड़ चुके हैं
पर सारे परिवेश....
संविधान को जकड़े भक्षक

धर रक्षक के वेश !!?

बन सेवक भैय्या और नेता

जनता का सम्बल ले लेकर

रंग बिरंगे स्वप्न दिखाए,

ज्यों ही कुर्सी पर जा धमके

रोज मिटिंग, नव नियम बनाए..!

देश घटाए-पेट बढ़ाए

जनहित नहीं पार्टी हित में

रोज- रोज वो नियम बनाए !

शासन सेवा में सत्तर

रोज लगाएं अटकल..

सेवा कर्मियों के जीवन में

नव नियमों से हलचल

सेवाकाल-अहर्ता -आयु

तय करते बटमार,

कुर्सी चिपकू खटमल सारे

चूसेंगे सरकार .....!

चपरासी भी पढ़ा-लिखा हो

मैट्रिक, बी.ए, हाथ पैर भी सही सलामत

जो हुक्म बजाए, गाली खाए,

और ताज पहनकर कोई भी बैठे

डाकू, अपराधी, गुंडा, नंगा

देश चलाना, देश बचाना..जिसका जिम्मा
मुँह उठाए जो... घुस आए। !?!?!?
उसकी मर्जी जो नियम बनाए
राष्ट्रयुवा धन-देश नशाए
जैसी किसम का धंधेबाज हो
वैसी सलाह देगा, घुस खाए
हिन्द राष्ट्र की भाषा हिंदी
टी वी रेडियो के मुख बखान गया
इंग्लिश पी इंग्लिश में गाए ।!?
नेता मंत्री या राष्ट्रपति की
क्या योग्यत ! क्या ऊंचाई?
पागल न हो..35 का हो
होश में हो, बस इतना काफी
राष्ट्रहित-जनहित विचार
जिसके भेजे में घुस न पाऐ..
सज टोपी धर विधि की लाठी
जनता मारे ..उसको माफ़ी !?!?!?
जिनकी बदौलत-देश सुरक्षित
सुख की नींदें लेता है,
वो पत्थर, गड्ढों, कांटों पर
जागा-आज़ादी सँजोता है,
गाड़ी बंगला और सुरक्षा
उसका भी अधिकार है,

या शान-शुकून के अधिकारी बस-

मंत्री-अफसर परिवार है !!

गरजेंगे-छाती दिखलाकर

जनसभा-सम्मेलन में,

सत्ता और साम्राज्य मिला तो

घूमो देश-विदेशन मे,

भूल चुके हैं असली पीड़ा

सीमा-बस्तर-काश्मीर,

"बल" को अब तक "बल" न दिया

नव नियम बना.. "हर पीर"

कितने दिनों तक मूक होकर

दानवों के ग्रास बनोगे !

या पूर्ण सुखद संविधान बने

ऐसा कुछ प्रयास करोगे !!

हिंदी-हिन्दुस्तान-संविधान

सचमुच बने महान....

भगत, राजगुरु, सुखदेव बन

क्या...दोगे फिर बलिदान ! ? ?

सीमा पे तिरँगा फहराए रखना....

सीमा पे तिरँगा.. फहराए रखना
देश की आज़ादी..बचाए रखना,
तुम हो तो दिवाली है होली है ईद है...
तुम्हारे हौसले की जनता मुरीद है...
तिरँगा तुम्हारे बाज़ुओं ने थाम रखा है
तभी तलक स्वत्रंतता का जाम रखा है
बन्दूक अपने कांधे में जमाए रखना
सीमा पे अपनी नज़रें गड़ाए रखना..
स्वतंत्रता का दीपक जलाए रखना ।।सीमा पे..।।

चल पड़ते हो सरहद तुम, शीश कटाने को,
ढाल बन अड़े हो, तुम देश बचाने को...
वन्दे मातरम् की हुंकार भरा करते
जयहिंद गर्जना तुम करते हो मरते-मरते
निज सांस-रक्त दान कर अवाम बचा लेते
जिनसे कोई न नाता, जां उनके लिए देते
हिमालय सी छाती को अड़ाए रखना.......
दुश्मन को शरारे से भगाए रखना ।।सीमा पे...।।

वो जागते पहरे में देश सुख की नींद सोता है
वो पहाड़ों-गुफाओं-बीहड़ों में सजग होता हैं,
हम अपनो की चिंता में उनको ही भूल जाते हैं

जिनकी वजह से सड़कों में बेखौफ घूम आते हैं

वो अपने नाते रिश्ते प्यार सब को छोड़ आते हैं

हमको बचाने के लिये खुद जां गंवाते है...

इन बेटों को कभी भी न भुलाए रखना.........

कुर्बानियां माथे से लगाए रखना ।।-सीमा पे।।

प्राणों से भी ज्यादा वतन है जिनको प्यारा

अपने लहू से जिनने सर जमीं को है सँवारा,

वतन-अमन की खातिर, बारूद में कूद जाते हैं

लहू से लथपथ.. तिरँगे में लिपट आते है

वीरों की याद ....रग-रग बहाए रखना....

आज़ादी की फसल को लहलहाए रखना ।।सीमा।।

जय हिंद.....

मेरा देश, मेरा देव, मेरी पूजा

देश मेरा देव मेरा, सांस मेरी जान है.....
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है।
फहरता जब तक रहे, आज़ाद हिंदुस्तान है।
तिरँगा हर भारतीय की जान है अभिमान है,
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है।।
हाथ में लेकर ध्वजा सीमा पे तन कर हैं खड़े
जां हथेली पर लिए, आंधी -तूफानों में अड़े
सम्मान माटी का बचाने, वीर देते जान है।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है।।
विश्व का सबसे बड़ा गणतंत्र है, भारत हमारा
वीर पुत्रों से भरा स्वतंत्र है,....भारत हमारा
रक्त और साँसे समर्पित कर सम्हाले मान हैं।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
विश्व जन को सत्य का, देता रहा सन्देश है
अनेकता में एकता, मिसाल... मेरा देश है
भाईचारा, मित्रता, सहयोग पर बलिदान है।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है।।
रंग केसरिया का मतलब, तपस्या और त्याग है
स्वेत बतलाता हमारा सत्य निशदिन साथ है
हरा हरियाली है, प्रकृति यहाँ धनवान है।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है।।

देश मंदिर है, कहीं चर्च और गुरुद्वार भी
पूजे जाते है यहां मस्जिदो के मिनार भी
भारत भूमि में बराबर हर धर्म का सम्मान है ।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
बाईबल यहां है पूजता, भागवत यहां काश्लोक है
गूंजता आठों पहर, अज़ान का आलोक है
मेरा भारत वेद की, पावन ऋचा का ज्ञान है ।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
स्वर्ग से सुंदर मनोरम, दिल-धरा कश्मीर है
शत्रु लालच में जहां हर रोज मारे तीर है
बैरी की छाती को चीरे, वीरों की कमान है।
नभ में लहराता तिरंगा, भारती की शान है ।।
देव देवी नरऔ नारी, शिशु प्रभु के रूप हैं
माँ-पिता पूजें यहां, जीवन के छावं और धूप हैं
दया-क्षमा की इस धरा में, जन्म एक वरदान है।।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
हमने लहू से सींची है, भारत ध्वजा, जवानों के
पाई आज़ादी है धरती-खेतों और खलिहानों के
गूंजता भारत धरा पर, जन-गण-मन गान है।
नभ पे लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
आज़ाद, नेहरू, शास्त्री, गांधी, चंद्र शेखर, राय
तिलक, बिस्मिल, सुभाष, राणा, शिवाजी और धाय

शहीदों के खून से लिक्खी गई अभियान है ।
नभ में लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
ईद, होली और दिवाली, मनाते क्रिसमस भी हैं
नानक, ईसा, अल्लाह और, हम प्रभु के वश भी हैं
पावन धरा की पुण्य ये, संस्कृति महान है।
नभ पे लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
जलियाँवाला बाग़ के स्मृति की है एक कहानी
वीरांगनाओ, वीरों के, वीरता अदभुत, जुबानी
सुखदेव, राजगुरु, भगत का ये स्वाभिमान है।
नभ पे लहराता तिरंगा, हिन्द जा सम्मान है ।।
कृष्ण- महाभारत है शिक्षा, राम का वनवास है
दुला-हसन की जाबांजी और बुद्ध का सन्यास है
अशोक का हृदय बदलना, अहिंसा का गान है।
नभ पे लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है ।।
नभ पे लहराता तिरंगा, हिन्द का सम्मान है
लहरता जब तक रहे, आज़ाद हिंदुस्तान है
सूर, तुलसी, कबीर के ग्रंथों के पावन ज्ञान हैं।
झुकने न देंगे हम ध्वजा, जब तक लहू है प्राण है।।
जय हिंद

13 अगस्त 2004

डॉ0 बी0एस0पी0 कॉलेज वार्षिकोत्सव हेतु लिखा....

शेर पे स्वार मईया देश मेरे आओ

शेर पे सवार मईया देश मेरे आओ
मची हाहाकार माइयाँ देश मेरे आओ,
बढे भ्रष्टाचार मइयाँ देश मेरे आओ
शत्रु अत्याचार मइया देश मेरे आओ
दुष्टों का करने संहार मईया आओ।।--।।

गांव हैं अँधेरे में न बिजली है न पानी है
रोग तांडव कर रहे, कुर्सियों की मनमानी है,
कागजों में सड़कें बनाई जाती हैं
असल मे सड़क बांट कर खाई जाती है
झोपडी औ पगडंडिया उड़ाई जाती हैं,
करने उपकार मईया देश मेरे आओ।।--।।

गांव घर उजाड़ कर फैक्ट्रियां बनाएंगे
खेतों को खत्म कर, पक्की सड़कें बनाएंगे,
बिना आन्न जल वायु के जीव जिएगा कैसे
हरियाली को नष्ट कर मशीन उपजाएंगे..
बचाने बंटाधार मैया देश मेरे आओ।।--।।

रहमतों की बरसात करने वाली मेरी मईया
पहाड़ो में वास करने वाली मेरी मइयाँ
मुश्किलें आसान करने वाली मेरी मईया
दुष्टों का बाश करने वाली मेरी मइया

लेके तलवार मइया देश मेरे आओ।।--।।

सड़कों पे चलती तेज रफ्तार से मईया
ट्रेलरों डंफ्रिं और कारों की कतार से मइया
राहगीर और दुपहिया चालकों को बचाना...
हर जीव को बचाती रहना पहियों की मार से मईया
जीवन साकार मईया देश मेरे आओ ।।--।।

कोई पुत्र न हो मुझसा अनाथ मेरी मइया
सर पे रहे ममता का सदा हाथ मेरी मइया
गोद कोई सुनी न आँचल तार-तार हो
भारती मैया का आंगन सदा बहार हो..
रहम की फुहार मईया देश मेरे आओ।।--।।

तेरे दर पे तेरे बच्चे उम्मीद ले के आए हैं
जिनके सर पे दुखों के मुश्किलो के साए हैं
सबके मन की मुरादें पूरी कर दो माता
सबके दामन खुशियों से भर दो माता
करके रसदार मइया देश मेरे आओ।।--।।

सामने सड़क से गुजरते, दौरों और जांच के बहाने
लाल बत्ती के काफिलों में टोपी-गमछा मनमाने
देश लूटने के लिए तुझसे वरदान मांगेंगे
सर झुकाकर संसार का सारा सामान मांगेंगे
लालच का घटा के आकार मैया आओ ।।--।।

हाथ जोड़कर बल मांगेंगे कल मांगेंगे छल मांगेंगे
बैंको में खाते, हवेलियां, फैक्ट्रियां पल पल मांगेंगे
इन बदमिजाजों के मिज़ाज़ ठंडा कर दो माते
इनके दिमाग में देश प्रेम और ईमान भरदो माते
हवश का काने संहार मईया आओ।।--।।

नेता मंत्री अधिकारी देश लूटने के बजाय देश पर लुट जाए
टोपी कुर्सी कुर्ता और गमछा जनता की सेवा में जुट जाएं
सरहद पार लाल होने वाले लालों का घर कभी न अन्धेरा हो
जननि की सेवा करने वाले सपूतों के जीवन में सदा सबेरा हो
दुश्मन पे करके ...प्रहार मइया आओ। --।।

रायपुर, भोपाल, दिल्ली के द्वार में मइया
मंत्रालयों फैक्ट्रियों कम्पनियिं में रोजगार मईया
न कोई भेदभाव हो न घुस फूस न घपले कोई
बदनीयती का नाश कर, कर दो चमत्कार मइया..
ख़त्म भ्रष्टाचार मइया देश मेरे आओ।।--।।

राजधानी में जगमग रौशनी की फुहार माते
पगडंडीओं और झोपड़ी क्यों अंधियार माते
जो पीते खाते हैं उनके ...खाते ही खाते
जो खा-पी न पाते है उनसे क्यों दुर्व्यव्हार माते
एक सा करके.. व्यवहार मैया आओ।।--।।

मंदिर मजार मूर्तियों में सब कुछ न फूँक डालो तुम
गरीब-भूखे-अपाहिज-असहायों को सम्हलो तुम
धर्म के नाम पर कभी न हों दंगे लड़ाई
जात धरम झूठे, सारे इंसान.. बहन भाई
जन जन करते चित्कार मइया आओ.।।--।।

ओ फैक्ट्री वालो नदी नालों को मत खराब करो
धरा के प्यास, जीवों के आकाश मत खराब करो
जल को दूषित करने वालों को रोको माता
फैक्ट्री मालिको के दिलों को ठोको मेरी माता
जल जीवन को सँवार मइयाँ आओ।।--।।

धरती से वनों का कर रहे नाश कुछ हैवान माई
न रहे जंगल तो सांस बिन जाएगी जान माई
न होगी बरसात बी रहेगा प्राण वायु
विश्व हो चलेगा जन विहीन, लो अब मान माई
जंगलों का उद्धार मईया देश मेरे आओ।।--।।

टोपी कुरता अउ कुर्सी में वास करो माते
याद रखें वतन अमन रक्षा शपथ की बातें,
देश-वेश-कोष हजम करने से सदा बाज़ आएं
देश के सपूत बन कर देश का बल बढ़ाएं..
अमन चैन झंकार मइया देश मेरे आओ।।--।।

राष्ट्र प्रेम की भावना हर हिन्द मन प्रबल कर दो
आस्तीनों में छुपे गद्दारों जा नाश सकल कर दो
देश जन सेवा के भाव हरदिल भर दो मईया
चोरी डकैती लूट हत्या का वध कर दो मइया
दुष्टता का करके संहार मईया आओ।।--।।

बम बारूद तीर तलवार की न कहीं जरूरत हो
विश्व बंधुत्व की लहर ऐसी चला दो माते
जयचंदों, दुशाशनो, कंसों अफजलों को खत्मकर
प्रेम की धारा संसार में बहा दो माते
शत्रुता का करके संहार मैया आओ।।--।।

कोई नशे की गिरफ्त में कोई गरीबी की खाई
कोई अज्ञान् के वश में किसी को बीमारी ने खाई
न रहे कोई भूखा, अपंग, गरीब, गंवार मेरे देश में
फिर कोई जन्मे बुद्ध राम कृष्ण साईं के वेश में
ले के अवतार मईया देश मेरे आओ।।--।।

छल दम्भ द्वेष रोग दोष न रह पाएं दुनिया में
बस दोस्त रहें एक- दूसरे के आदम सारे दुनिया में
रोज खाए पेट भर, सोये नींद भर, जिए मन भर
न इकट्ठा करें धन न दूषित रहे कोई मन
आदमी का कर के बेड़ापार मइया आओ।।--।।

सिपाही का पैगाम

वतन के नाम पर..ये जान हम कुरबान करते हैं
झुका सर जन्म भू-माता-पिता..सलाम करते हैं।।

जरूरत जब वतन को हो हमारे खून-जिगरा की
हंसते-हंसते देंगे प्राण....... ये एलान करते हैं।।

हम न हिंदु-मुसलमान हैं- न सिक्ख-ईसाई
बेटे भारती के हैं....तिरँगा थाम रखते हैं।।

पहले बाप-माँ जो रब्ब-प्रभु-अल्ला औ ईश्वर हैं
फिर है, देश ध्वज वन्दन..सुबहो शाम करते हैं।।

खुश रहे...अहले-वतन ! हम चौकसी हरदम
हिमगिर शिखर पे पहरे का हम काम करते हैं।।

सुख की नींद सोऐं जन-सुरक्षित जन्म भूमि हो
सजग हैं-अडिग-अटल...नहीं आराम करते हैं।।

जय हिंद-जय भारती.....

वीर मुक्तक

⁕1⁕

सीमा पर पहरा देता है अडिग वो जिम्मेदारी से
तन मन सब वार दिया है देश को जिस खुद्दारी से,
आँधी-तूफां-शीत लहर, कठिनाई भी सह कर के
सजग अड़ा चट्टान, लड़े है दुश्मन की गद्दारी से ।।

⁕2⁕

जंगल पर्वत नदी खाइयां लांघ, राह बढ़ जाते हैं
वतन अमन की शपथ लिए, शत्रु राह अड़ जाते हैं,
नमन देश के लालों को, सीमा पर छाती से बिछकर
मातृभूमि की रक्षा को जो जां की भेंट चढ़ाते हैं।।

⁕3⁕

खुली छूट दो सेना को, दुश्मन को गोली मार दें
सरहद को आतंक मुक्त कर, भारत भूमि तार दें,
शंखनाद करो चीन-पाक को नेस्तनाबूद किया जाए
आतंकियों का मूल नष्ट कर क्षण में अग्नि जार दें।

⁕4⁕

रगों का कतरा-कतरा मैँ बहाना चाहता हूँ
मातृ भू पर तन-मन कुर्बां हो जाना चाहता हूँ
चाह नहीं मेरी सजी बारात निकले दोस्तों
तिरंगा कफ़न ले माटी के आगोश जाना चाहता हूँ ।।

⁕5⁕

भूल गए हम हिंदुस्तानी, अंग्रेजी अत्याचारों को
मना रहे हैप्पी न्यू ईयर, शर्म नहीं बदकारों को,
नाचो-हरसो-खुशी मनाओ, फिर कोई आकर लूटेगा
राज करेगा सिर चढ़कर, रुलाएगा हिन्द..यारों को।

⁕6⁕

मुक्त करें आकाश भूमि को, घेरों और लकीरो से
मुक्त करें अब धर्म धरा को पंडित और फकीरों से
पार्टीवाद से राजनीति की गर्दन गर छुड़वा पाएं
आओ सब मिल देश बचाएं, जयचंदों के तीरों से।।

⁕7⁕

जयति जय-जय, जयति जय-जय, जयति जय माँ भारती,
तुझपे तन-मन-धन-जीवन सर्वस हूँ, मैं अब वारती,
फहरता रहे ध्वज तिरंगा, देश मुस्काता रहे,
निज देह तक तज, रक्त तिलक कर मैं उतारूँ आरती।।

⁕8⁕

बहना ने राखी भेजी, सरहद पर भाई को,
सीमा की रक्षा करना, बांध कलाई को,
सीने पर गोली खाना पर ध्वजा उठाए रखना,
यही वचन दो बहना को राखी बंधाई को...।।

⁕9⁕

देश की रक्षा में जो सीमा के पहरेदार हैं,
हर घड़ी हरवक्त जो जां देने को तैयार हैं,
आज राखी उन कलाई-मुस्कुराई शान से,
देश की रक्षा में मिटना निनका कि त्योहार है।।

⁕10⁕

मैं तिरँगे में लिपट आया अगर,
बहना राखी तुम तिरँगे में पिरोना,
भाई अपना गगन में फहरा देना,
जय हिंद का उदघोष करना और न रोना..।

⁕11⁕

लाल वही माते भारती के जु, अड़े हुए हैं हिम गिरी को सीमा,
आन औ बान को शीश कटावें जो, बैरी को काट बना रहे कीमा,
मातु के लाज रखे कर खातिर, आपन सुख सारो तज दीन्हा,
देश के खातिर जान दई अरु, हंस कर बारूद छाती पे लीन्हा ।।

⁕12⁕

"भूली बिसरी-कथा" हो गए हिन्द के सब संस्कार,
हिंदी सहमी, इंग्लिश नाचे भारत बीच बाज़ार,
नई नसल तो "गई फसल" है, अब भगवान ही मालिक,
नेम-धरम न रीत ही जाने, खो दियो सब ब्यवहार।।

⁕13⁕

राम, अल्लाह, यीशु, नानक की धरती संस्कारों की,
मान है हिंदुस्तान धरा पर.......सबके त्यौहारों की,
यहीं सारे धर्मों-मजहब को प्यार/न्याय मिलता है,
अमर त्याग, भाईचारा, कुर्बानी यहां यारों की।।

⁕14⁕

दया-क्षमा-दान की पीछे, रह गई है परिपाटी,
तपी-दयालु-महादानियों की थी भारत माटी,
जर-जमीन-सत्ता के लोलुप हो गए अब आदम हैं,
हिंदुस्तान के संस्कारों को लालच ने है पाटी।

⁕15⁕

मन्दिर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा है कितने बनाए,
किसी गुम्बद पर नहीं किसी ने तिरँगा लहराए,
जिनकी वजह से मन्दिर-मस्जिद-आजादी हैं जिंदा,
उनको किसी ने आज तलक कोई मन्दिर नहीं बिठाए!!

⁕16⁕

कुछ रंगों-कुछ झंडो-खेमो के लिए लड़ रहे,
कुछ रंगों कुछ जाति-धर्मो के लिए लड़ रहे,
देश के खातिर लड़ना क्या सबका धर्म नहीं है,
सारे मुखिया एक दूजे के सिर इल्ज़ाम मढ़ रहे !!!

⁕17⁕

एक हाथ मे ध्वजा तिरंगा.... एक हाथ तलवार,

पाकिस्तान को मैं देता हूं सीमा से ललकार,

शीश काट कर वक्ष फाड़कर धरा लाल कर दूंगा,

भारत माँ को शत्रु मुंड़ो की....पहनाऊंगा हार।।

⁕18⁕

सीमा पार चलकर.... शत्रु को ललकार दूँ,

नापाक के षड्यंत्र... .जड़ से मार दूँ,

आँख जो बैरी उठाए...मेरे तिरंगे पर,

उसकी छाती में तीर और आंख में तलवार दूँ।।

⁕19⁕

कायरता की निशानी, है छुप के वार करना,

मुश्किल है हिन्द भू, शत्रु को पार करना,

आये तो सीना ताने, ललकारता अकेला,

भूमि बिछा न दूं तो, बेटा न माँ का कहना।।